

More Books At

शामुणी

हिन्दीय भाषा:

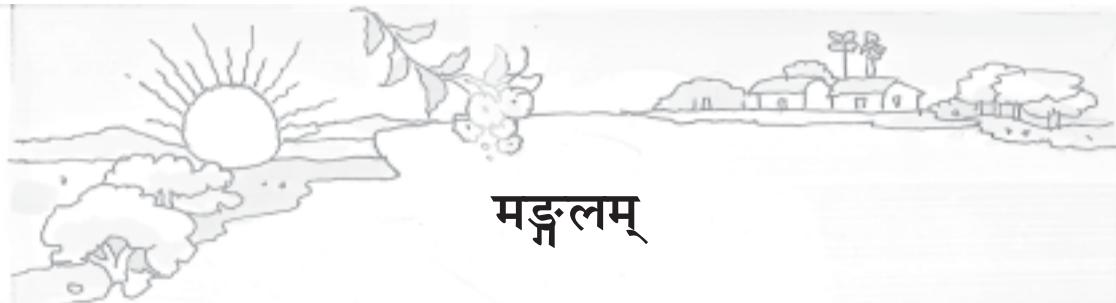
नवायमवाचिकाल्पाः
सरस्वत्यानपाद् च पुनर्वाच्यम्

www.GOALias.blogspot.com



विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक्	v	
भूमिका	ix	
मङ्गलम्	1	
प्रथमः पाठः	शुचिपर्यावरणम्	3
द्वितीयः पाठः	गुणवती कन्या	13
तृतीयः पाठः	शिशुलालनम्	21
चतुर्थः पाठः	व्यायामः सर्वदा पथ्यः	31
पञ्चमः पाठः	बुद्धिर्बलवती सदा	39
षष्ठः पाठः	सुभाषितानि	48
सप्तमः पाठः	भूकम्पविभीषिका	56
अष्टमः पाठः	प्रश्नत्रयम्	64
नवमः पाठः	प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्	73
दशमः पाठः	अन्योक्तयः	82
एकादशः पाठः	विचित्रः साक्षी	90
द्वादशः पाठः	जीवनं विभवं विना	99



मङ्गलम्

ॐ तच्यक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम् ।
अदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात् ॥1॥

(यजुर्वेद 36.24)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो-
उद्ब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृथेऽसन्-
अप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥2॥

(ऋग्वेद 1.89.1)

भावार्थः

देवों द्वारा निरूपित यह शुक्ल वर्ण का नेत्र रूप (सूर्य) पूर्व दिशा में ऊपर उठ चुका है। हम सब सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक जीते रहें। सौ वर्षों तक सुनते रहें, सौ वर्षों तक शुद्ध रूप से बोलते रहें। सौ वर्षों तक स्वावलम्बी (अदीन) बने रहें। और यह सब सौ वर्षों से भी अधिक चलता रहे ॥1॥

हमारे पास चारों ओर से ऐसे कल्याणकारी विचार आते रहें जो किसी से न दबें, उन्हें कहीं से बाधित न किया जा सके (अपरीतासः) एवम् अज्ञात विषयों को प्रकट करने वाले (उद्भिदः) हों। प्रगति को न रोकने वाले (अप्रायुवः) तथा सदैव रक्षा में तत्पर देवगण प्रतिदिन हमारी वृद्धि के लिए तत्पर रहें ॥2॥



प्रथम पाठः

शुचिपर्यावरणम्

प्रस्तुत पाठ आधुनिक संस्कृत कवि हरिदत्त शर्मा के रचना संग्रह 'लसल्लितिका' से संकलित है। इसमें कवि ने महानगरों की यांत्रिक-बहुलता से बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह लौहचक्र तन-मन का शोषक है, जिससे वायुमण्डल और भूमण्डल दोनों मलिन हो रहे हैं। कवि महानगरीय जीवन से दूर, नदी-निर्झर, वृक्षसमूह, लताकुञ्ज एवं पक्षियों से गुञ्जित वनप्रदेशों की ओर चलने की अभिलाषा व्यक्त करता है।

दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम्।
शुचि-पर्यावरणम्॥
महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।
मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम्॥
दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्। शुचि...॥1॥



कञ्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।
वाष्पयानमाला संधावति वितरन्ती ध्वानम्॥
यानानां पड़क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संसरणम्। शुचि...॥2॥

वायुमण्डलं भृशं दूषितं न हि निर्मलं जलम्।
कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं समलं धरातलम्॥
करणीयं बहिरन्तर्जगति तु बहु शुद्धीकरणम्। शुचि...॥३॥

कञ्चित् कालं नय मापस्मान्नगराद् बहुदूरम्।
प्रपश्यामि ग्रामान्ते निझर-नदी-पयःपूरम्॥
एकान्ते कान्तारे क्षणमपि मे स्यात् सञ्चरणम्। शुचि...॥४॥

हरिततरुणां ललितलतानां माला रमणीया।
कुसमावलिः समीरचालिता स्यान्मे वरणीया॥
नवमालिका रसालं मिलिता रुचिरं संगमनम्। शुचि...॥५॥



अयि चल बन्धो! खगकुलकलरव गुज्जितवनदेशम्।
पुर-कलरव सम्भ्रमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशम्॥
चाकचिक्यजालं नो कुर्याञ्जीवितरसहरणम्। शुचि...॥६॥

प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा नो भवन्तु पिष्टाः।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान्न समाविष्टा॥
मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम्। शुचि...॥७॥

शब्दार्थः

दुर्वहम्	-	दुष्करम्	-	कठिन, दूभर
जीवितम्	-	जीवनम्	-	जीवन
अनिशम्	-	अहर्निशम्	-	दिन-रात
कालायसचक्रम्	-	लौहचक्रम्	-	लोहे का चक्र
शोषयत्	-	शुष्कीकुर्वत्	-	सुखाते हुए
तनुः	-	शरीरम्	-	शरीर
पेषयद्	-	पिष्टीकुर्वत्	-	पीसते हुए
वक्रम्	-	कुटिलम्	-	टेढ़ा
दुर्दान्तैः	-	भयङ्करैः	-	भयानक (से)
दशनैः	-	दन्तैः	-	दाँतों से
अमुना	-	अनेन	-	इससे
जनग्रसनम्	-	जनभक्षणम्	-	मानव विनाश
कज्जलमलिनम्	-	कज्जलेन मलिनम्	-	काजल-सा मलिन (काला)
धूमः	-	वाष्पः	-	धुआँ
मुञ्चति	-	त्यजति	-	छोड़ता है
शतशकटीयानम्	-	शकटीयानानां शतम्	-	सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ
वाष्पयानमाला	-	वाष्पयानानां पंक्तिः	-	रेलगाड़ी की पंक्ति
वितरन्ती	-	ददती	-	देती हुई
ध्वानम्	-	ध्वनिम्	-	कोलाहल
संसरणम्	-	सञ्चलनम्	-	चलना
भृशं	-	अत्यधिकम्	-	अत्यधिक
भक्ष्यम्	-	खाद्यपदार्थ	-	भोज्य पदार्थ
समलम्	-	मलेन युक्तम्	-	मलयुक्त, गन्दगी से युक्त
ग्रामान्ते	-	ग्रामस्य सीमायाम् (सीमि)	-	गाँव की सीमा पर
पयःपूरम्	-	जलाशयम्	-	जल से भरा हुआ तालाब

कान्तारे	- वने	- जंगल में
कुसुमावलि:	- कुसुमानां पंक्तिः	- फूलों की पंक्ति
समीरचालिता	- वायुचालिता	- हवा से चलायी हुई
रसालम्	- आप्रम्	- आम
रुचिरम्	- सुन्दरम्	- सुन्दर
खगकुलकलरव	- खगकुलानां कलरवः (पक्षिसमूहध्वनिः)	- पक्षियों के समूह की ध्वनि
चाकचिक्यजालम्	- कृत्रिमं प्रभावपूर्ण जगत्	- चकाचौंध भरी दुनिया
प्रस्तरतले	- शिलातले	- पत्थरों के तल पर
लतातरुगुल्मा:	- लताश्च तरवश्च गुल्माश्च	- लता, वृक्ष और झाड़ी
पाषाणी	- पर्वतमयी	- पथरीली
निसर्गे	- प्रकृत्याम्	- प्रकृति में

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) कविः किमर्थं प्रकृतेः शरणम् इच्छति?
- (ख) कस्मात् कारणात् महानगरेषु संसरणं कठिनं वर्तते?
- (ग) अस्माकं पर्यावरणे किं किं दूषितम् अस्ति?
- (घ) कविः कुत्र सञ्चरणं कर्तुम् इच्छति?
- (ङ) स्वस्थजीवनाय कीदृशे वातावरणे भ्रमणीयम्?
- (च) अन्तिमे पद्मांशे कवेः का कामना अस्ति?

2. सन्धि/सन्धिविच्छेदं कुरुत-

- (क) प्रकृतिः + = प्रकृतिरेव
- (ख) स्यात् + + = स्यान्नैव
- (ग) + अनन्ताः = ह्यनन्ताः

- (घ) बहिः + अन्तः + जगति =
- (ङ) + नगरात् = अस्मान्नगरात्
- (च) सम् + चरणम् =
- (छ) धूमम् + मुञ्चति =

3. अधोलिखितानाम् अव्ययानां सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत-
भृशम्, यत्र, तत्र, अत्र, अपि, एव, सदा, बहिः

- (क) इदानीं वायुमण्डलं प्रदूषितमस्ति।
- (ख) जीवनं दुर्वहम् अस्ति।
- (ग) प्राकृतिक-वातावरणे क्षणं सज्जरणम् लाभदायकं भवति।
- (घ) पर्यावरणस्य संरक्षणम् प्रकृतेः आराधना।
- (ङ) समयस्य सदुपयोगः करणीयः।
- (च) भूकम्पित-समये गमनमेव उचितं भवति।
- (छ) हरीतिमा शुचि पर्यावरणम्।

4. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखित-पदेषु प्रकृतिप्रत्ययविभागं/संयोगं कुरुत-
यथा-जातम् = जन् + क्त

- (क) प्र + कृ + क्तिन् =
- (ख) नि + सृ + क्त + टाप् =
- (ग) + क्त = दूषितम्
- (घ) + = करणीयम्
- (ङ) + यत् = भक्ष्यम्
- (च) रम् + + = रमणीया
- (छ) + + = वरणीया
- (ज) पिष् + = पिष्टाः

5. अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं लिखत-

- | | |
|-------------|-------|
| (क) सलिलम् | |
| (ख) आप्रम् | |
| (ग) वनम् | |
| (घ) शरीरम् | |
| (ङ) कुटिलम् | |
| (च) पाषाणम् | |

6. उदाहरणमनुसृत्य पाठात् चित्वा च समस्तपदानि लिखत-

यथा-विग्रह पदानि	समस्तपद	समासनाम
(क) मलेन सहितम्	समलम्	अव्ययीभाव
(ख) हरिताः च ये तरवः (तेषां)	कर्मधारय
(ग) ललिताः च याः लताः (तासाम्)	कर्मधारय
(घ) नवा मालिका	कर्मधारय
(ङ) धृतः सुखसन्देशः येन (तम्)	बहुब्रीहि
(च) कज्जलम् इव मलिनम्	कर्मधारय
(छ) दुर्वान्तैः दशनैः	कर्मधारय

7. रेखाङ्कित-पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) शकटीयानम् कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति।
- (ख) उद्याने पक्षिणां कलरवं चेतः प्रसादयति।
- (ग) पाषाणीसभ्यतायां लतातरुगुल्माः प्रस्तरतले पिष्टाः सन्ति।
- (घ) महानगरेषु वाहनानाम् अनन्ताः पड्कतयः धावन्ति।
- (ङ) प्रकृत्याः सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते।

योग्यताविस्तारः

समास - समसनं समासः

समास का शाब्दिक अर्थ होता है-संक्षेप। दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से जो तीसरा नया और संक्षिप्त रूप बनता है वह समास कहलाता है। समास के मुख्यतः चार भेद हैं—

- | | |
|-------------------|-------------|
| 1. अव्ययीभाव समास | 2. तत्पुरुष |
| 3. बहुब्रीहि | 4. द्वन्द्व |

1. अव्ययीभाव

इस समास में पहला पद अव्यय होता है और वही प्रधान होता है।

यथा-निर्माक्षिकम् मक्षिकाणाम् अभावः।

यहाँ प्रथमपद निर् है और द्वितीयपद मक्षिकम् है। यहाँ मक्षिका की प्रधानता न होकर मक्षिका का अभाव प्रधान है, अतः यहाँ अव्ययीभाव समास है। कुछ अन्य उदाहरण देखें-

- | | | | | |
|-----------------|---|--------------------|---|------------------------|
| (i) उपग्रामम् | - | ग्रामस्य समीपे | - | (समीपता की प्रधानता) |
| (ii) निर्जनम् | - | जनानाम् अभावः | - | (अभाव की प्रधानता) |
| (iii) अनुरथम् | - | रथस्य पश्चात् | - | (पश्चात् की प्रधानता) |
| (iv) प्रतिगृहम् | - | गृहं गृहं प्रति | - | (प्रत्येक की प्रधानता) |
| (v) यथाशक्ति | - | शक्तिम् अनतिक्रम्य | - | (सीमा की प्रधानता) |
| (vi) सचक्रम् | - | चक्रेण सहितम् | - | (सहित की प्रधानता) |

2. तत्पुरुष - 'प्रायेण उत्तरपदप्रधानः तत्पुरुषः'

इस समास में प्रायः उत्तरपद की प्रधानता होती है और पूर्व पद उत्तरपद के विशेषण का कार्य करता है। समस्तपद में पूर्वपद की विभक्ति का लोप हो जाता है।

यथा- राजपुरुषः अर्थात् राजा का पुरुष। यहाँ राजा की प्रधानता न होकर पुरुष की प्रधानता है, और राजा शब्द पुरुष के विशेषण का कार्य करता है।

- | | | |
|----------------|---|---------------|
| (i) ग्रामगतः | - | ग्रामं गतः। |
| (ii) शरणागतः | - | शरणम् आगतः। |
| (iii) देशभक्तः | - | देशस्य भक्तः। |

- (iv) सिंहभीतः - सिंहात् भीतः।
 - (v) भयापनः - भयम् आपनः।
 - (vi) हरित्रातः - हरिणा त्रातः।
- तत्पुरुष समास के दो भेद हैं—कर्मधारय और द्विगु।

(i) **कर्मधारय** - इस समास में एक पद विशेष्य तथा दूसरा पद पहले पद का विशेषण होता है।
यथा-

- पीताम्बरम् - पीतं च तत् अम्बरम्।
- महापुरुषः - महान् च असौ पुरुषः।
- कज्जलमलिनम् - कज्जलम् इव मलिनम्।
- नीलकमलम् - नीलं च तत् कमलम्।
- मीननयनम् - मीन इव नयनम्।
- मुखकमलम् - कमलम् इव मुखम्।

(ii) **द्विगु** - ‘संख्यापूर्वो द्विगुः’ इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है और समाहार (अर्थात् एकत्रीकरण या समूह) अर्थ की प्रधानता होती है।

यथा- त्रिभुजम् - त्रयाणां भुजानां समाहारः।

इसमें पूर्वपद ‘त्रि’ संख्यावाची है।

- पंचपात्रम् - पंचानां पात्राणां समाहारः।
- पंचवटी - पंचानां वटानां समाहारः।
- सप्तर्षिः - सप्तानां ऋषीणां समाहारः।
- चतुर्युगम् - चतुर्णा युगानां समाहारः।

3. **बहुब्रीहि** - ‘अन्यपदप्रधानः बहुब्रीहिः’

इस समास में पूर्व तथा उत्तर पदों की प्रधानता न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है।

यथा-

- पीताम्बरः - पीतम् अम्बरम् यस्य सः (विष्णुः)। यहाँ न तो पीतम् शब्द की प्रधानता है और न अम्बरम् शब्द की अपितु पीताम्बरधारी किसी अन्य व्यक्ति (विष्णु) की प्रधानता है।

- नीलकण्ठः - नीलः कण्ठः यस्य सः (शिवः)।
- दशाननः - दश आननानि यस्य सः (रावणः)।
- अनेककोटिसारः - अनेककोटिः सारः (धनम्) यस्य सः।
- विगलितसमृद्धिम् - विगलिता समृद्धिः यस्य तम्।
- प्रक्षालितपादम् - प्रक्षालितौ पादौ यस्य तम्।

4. द्वन्द्व - 'उभयपदप्रधानः द्वन्द्वः' इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों की समान रूप से प्रधानता होती है। पदों के बीच? में 'च' का प्रयोग विग्रह में होता है।

यथा-

- रामलक्ष्मणौ - रामश्च लक्ष्मणश्च।
- पतरौ - माता च पिता च।
- धर्मार्थकाममोक्षाः - धर्मश्च, अर्थश्च, कामश्च, मोक्षश्च।
- वसन्तग्रीष्मशिशिराः - वसन्तश्च ग्रीष्मश्च शिशिरश्च।

कविपरिचय - प्रो. हरिदत्त शर्मा सम्प्रति इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृत के आचार्य हैं। इनके कई संस्कृत काव्य प्रकाशित हो चुके हैं। जैसे-गीतकंदलिका, त्रिपथगा, उत्कलिका, बालगीताली, आक्रन्दनम्, लसल्लितिका इत्यादि। इनकी रचनाओं में समाज की विसंगतियों के प्रति आक्रोश तथा स्वस्थ वातावरण के प्रति दिशानिर्देश के भाव प्राप्त होते हैं।

भावविस्तारः

पृथिवी, जलं, तेजो वायुराकाशश्चेति पञ्चमहाभूतानि प्रकृतेः प्रमुखतत्त्वानि। एतैः तत्त्वैरेव पर्यावरणस्य रचना भवति। आव्रियते परितः समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सर्वविधजीवनसुखं ददाति। अस्माभिः सदैव तथा प्रयतितव्यं यथा जलं स्थलं गगनञ्च निर्मलं स्यात्। पर्यावरणसम्बद्धाः केचन श्लोकाः अधोलिखिताः सन्ति—

यथा-

- पृथिवीं परितो व्याप्य तामाच्छाद्य स्थितं च यत्
जगदाधाररूपेण, पर्यावरणमुच्यते॥

प्रदूषणविषये-

सृष्टौ स्थितौ विनाशे च नृविज्ञैर्बहुनाशकम्।
पञ्चतत्त्वविरुद्धं यत्साधितं तत्प्रदूषणम्॥

वायुप्रदूषणविषये-

प्रक्षिप्तो वाहनैर्धूमः कृष्णे बहवपकारकः।
दुष्टैर्सायनैर्युक्तो घातकः श्वासरुग्वहः॥

जलप्रदूषणविषये-

यन्त्रशाला परित्यक्तैर्नगरेदूषितद्रवैः।
नदीनदौ समुद्राश्च प्रक्षिप्तैर्दूषणं गताः॥

प्रदूषण निवारणाय संरक्षणाय च -

शोधनं रोपणं रक्षावर्धनं वायुवारिणः।
वनानां वन्यवस्तूनां भूमेः संरक्षणं वरम्॥
एते श्लोकाः पर्यावरणकाव्यात् संकलिताः सन्ति।

तत्सम-तद्भव-शब्दानामध्ययनम्-

अधोलिखितानां तत्समशब्दानां तदुद्भूतानां च तद्भवशब्दानां परिचयः करणीयः-

तत्सम	तद्भव
प्रस्तर	- पत्थर
वाष्प	- भाप
दुर्वह	- दूधर
वक्र	- बाँका
कज्जल	- काजल
चाकचिक्य	- चकाचक, चकाचौध
धूमः	- धुआँ
शतम्	- सौ (100)
बहिः	- बाहर

छन्दः परिचयः

अस्मिन् गीते शुचि पर्यावरणम् इति ध्रुवकं (स्थायी) वर्तते। तदतिरिक्तं सर्वत्र प्रतिपडिक्त 26 मात्राः सन्ति। इदं गीतिकाच्छन्दसः रूपमस्ति।

द्वितीयः पाठः

गुणवती कन्या

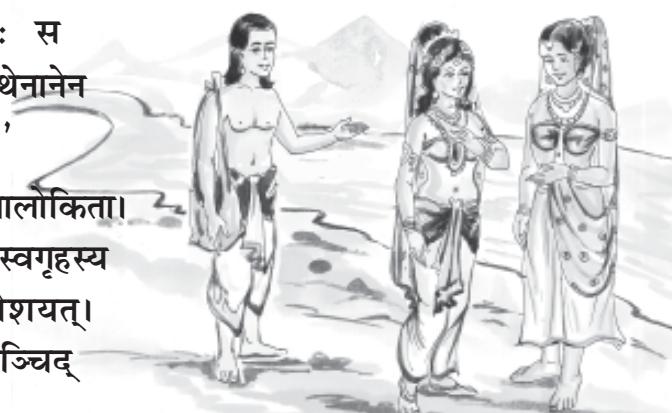
प्रस्तुत पाठ महाकवि दण्डी द्वारा रचित दशकुमारचरित नामक गद्यकाव्य के षष्ठ उच्छ्वास से सम्पादित कर संकलित है। यहाँ मित्रगुप्त अपने विचित्र वृत्तान्त के अन्तर्गत गोमिनी नामक कन्या की कथा सुनाता है जो एक प्रस्थ (32 पलों के बराबर) धान से एक व्यक्ति को सम्पूर्ण भोजन कराने का प्रबन्ध करती है।

अस्ति द्रविडेषु काञ्ची नाम नगरी। तस्यामनेककोटिसारः श्रेष्ठिपुत्रः शक्वितकुमारो नामासीत्। सोऽष्टादशवर्षदेशीयः चिन्तामापन्नः—‘नास्त्यदाराणाम् अननुगुणदाराणां वा सुखम्। तत्कथं नु गुणवद् विन्देयं कलत्रम्।’ स वस्त्रान्तपिनद्वशालिप्रस्थो दारग्रहणाय भुवमभ्रमत्। यां कामपि लक्षणवतीं कन्यां विलोक्य स पृच्छति—‘भद्रे! शक्विति किमनेन शालिप्रस्थेन गुणवदन्नम् अस्मान् भोजयितुम्?’ एवं कृते स हसितावधूतः गृहाद् गृहं प्रविश्याभ्रमत्।

एकदा स कावेरीतीरपत्तने विगलितसमृद्धिं विरलभूषणां कुमारीमपश्यत्। तस्या अतुलितरूपसम्पदाभिभूतः शक्वितकुमारोऽचिन्तयत्-सेयमाकृतिर्न शीलविरोधि नी। आसञ्जति मे हृदयमस्यामेव। तदेनां

परीक्ष्योद्वहामि। स्नेहपूर्णदृष्टिः स आह—‘अस्ति ते कौशलं शालिप्रस्थेनानेन सम्पन्नमाहारम् अस्मान् भोजयितुम्?’

ततस्तया वृद्धदासी साभिप्रायमालोकिता।
तस्य हस्तात् प्रस्थमात्रं धान्यमादाय स्वगृहस्य
चत्वरे तं प्रक्षालितपादम् उपावेशयत्।
ततस्तान् सुरभीन् शालीनातपे किञ्चिद्



विशोष्य मुहुर्मुहुः परिवर्त्य समायां भूमौ अघट्यत्। तुषेभ्यस्तण्डुलान्पृथक् कृत्वा धात्रीमुक्तवती-‘मातः! इमान् भूषणमार्जनसमर्थान् तुषान् स्वर्णकारेभ्यो देहि। ते भ्यो लब्ध्याभिः काकिणीभिः काष्ठानि स्थालीं शरावद्यं चाहर’ ततः सा तान् तण्डुलान् उलूखले मुसलेनावहत्य शूर्पेण शोधयित्वाऽसकृद् जलेन प्रक्षाल्य व्वथितजले प्राक्षिपत्। सिद्धेषु च तण्डुलेषु मण्डनिःसारणाय स्थालीमधोमुखीं कृतवती। इन्धनानि पुनरभसा शमयित्वा कृष्णाङ्गारानपि तदर्थिभ्यः प्रेषितवती। विक्रीतैरङ्गारैर्यत् मूल्यं लब्धं तेन शाकं घृतं दधि तैलं चिञ्चाफलं च क्रीतम्। ततो व्यञ्जनादिकं च तया सम्पादितम्।

अथ सा कन्या धात्रीमुखेनातिथिं स्नानाय प्रेरितवती। स्नानशुद्धायातिथये तैलमामलकं चायच्छत्। फलकमारुह्यं प्राङ्गणकदलीदलं लवित्वा तत्रासनं भोजनाधारं च कृतवती। पेयोपहारपूर्वं भोजनं घृतसहितोदनं व्यञ्जनं च तस्मै दत्तवती।



मध्ये मध्ये च विविधभोज्यादि प्रकारान् वर्णयित्वा रुचिमपि वर्धितवती। अन्ततः शिशिरवारिणा पेयमाचमनं च प्रदत्तवती। भुक्ते तु तस्मिन् तयास्य शयनव्यवस्थापि कृता।

एवं कन्यागुणसम्पदा समाकृष्टः शक्तिकुमारस्तां विधिवदुपयम्य नीतवान्। अतएवोक्तम्-

‘किं गृहिणः प्रियहिताय? दारगुणाः।’

शब्दार्थः:

अनेककोटिसारः	- अनेककोटि: सारः (धनम्) यस्य	- जिसके पास अनेक करोड़ धन हो
विन्देयम्	- प्राप्तव्यम्	- प्राप्त करना चाहिए
कलत्रम्	- पत्नी	- पत्नी
शालिः	- कलमः/तण्डुल-विशेषः	- धान (चावल)
प्रस्थः	- द्वार्तिंशत् पलात्मकः मापः	- एक विशिष्ट माप (32 पलों के बराबर)
गुणवदन्नम्	- स्वादिष्टम् अन्नम्	- स्वादिष्ट और पौष्टिक आहार
हसितावधूतः	- हसितेन अवधूतः/उपहासेन तिरस्कृतः	- उपहास द्वारा तिरस्कृत
तीरम्	- तटम्	- तट
पत्तनम्	- नगरम्	- नगर, कस्बा
विगलितसमृद्धिम्	- विगलिता समृद्धिः यस्याः ताम्	- निर्धन
आसन्नति	- आकृष्टो भवति	- आकृष्ट हो रहा है
परीक्ष्य	- परीक्षां कृत्वा	- परीक्षा करके
उद्वहामि	- विवाहं करोमि	- विवाह करता हूँ
साभिप्रायम्	- अभिप्रायेण सहितम्	- अभिप्रायपूर्वक
चत्वरे	- प्रांगणे	- आँगन में
प्रक्षालितपादम्	- प्रक्षालितौ पादौ यस्य तम्	- धुले हुए पैर बाले का
उपावेशयत्	- -	- बैठाया
सुरभीन्	- सुरभिसहितान्	- सुगन्धित
आतपे	- घर्मे	- धूप में
विशोष्य	- शुष्कीकृत्य	- सुखाकर
मुहुर्मुहुः	- वारम्वारम्	- बार-बार
परिवर्त्य	- परिवर्तनं विधाय	- उलट-पुलट कर

समायाम् भूमौ	-	समतल-भूमौ	-	समतल भूमि पर
अघट्यत्	-	घट्नम् अकरोत्	-	कूटा
तुषेभ्यः	-	शालित्वंभिः	-	धन की भूसी से
काकिणीभिः	-	पणकैः	-	पैसों से, कौड़ी से
स्थालीम्	-	पात्रविशेषम्	-	थाली
शरावद्वयम्	-	कंसद्वयम्/वर्धमानकद्वयम्	-	दो प्याले, दो कटोरे
आहर	-	आनय	-	लाओ
उलूखले	-	लोकभाषायाम् ओखल इति प्रसिद्धे पात्रे	-	ओखली में
मुसलेन	-	कुट्टनयन्त्रविशेषण	-	मूसल से
शोधयित्वा	-	स्वच्छीकृत्य	-	साफ करके
असकृत्	-	वारम्वारम्	-	बार-बार
प्रक्षाल्य	-	निर्मलीकृत्य	-	साफ करके
क्वथितजले	-	उष्णजले	-	गरम जल में
अम्भसा	-	जलेन	-	जल से
शमयित्वा	-	शान्तं कृत्वा, निर्वापयित्वा	-	ठंडा करके
कृष्णाङ्गारान्	-	अदर्घकाष्ठान्	-	कोयलों को
चिञ्चाफलम्	-	तिन्तिणी	-	इमली
व्यञ्जनादिकम्	-	शाकादिकम्	-	सब्जी आदि
आमलकम्	-	आमलकेन निर्मितम्	-	आँवले का
फलकम्	-	काष्ठासनम्	-	चौकी पीढ़ा
आरुह्य	-	अधिरुह्य	-	चढ़कर
लवित्वा	-	कर्त्तयित्वा	-	काटकर
भोजनाधारम्	-	भोजनस्य आधारम्	-	भोजन का आधार
पेयोपहारपूर्वम्	-	पेयोपहारपूर्वकम्	-	भोजन से पहले पीने वाला पेय पदार्थ के साथ

घृतसहितोदनम्	-	घृतयुक्तम् ओदनम्	-	घृतयुक्त भात
शिशिरवारिणा	-	शीतलेन जलेन	-	शीतल जल से
उपयम्य	-	परिणीय	-	विवाह करके
गृहिणः	-	गृहस्थस्य	-	गृहस्थ का
दारगुणाः	-	स्त्रीगुणाः	-	स्त्रियों के गुण
(दारा-पत्नी)				

अभ्यासः

1. अथोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

 - (क) शक्तिकुमारः कस्यां चिन्तायाम् आपत्रः आसीत्?
 - (ख) कावेरीतीरपत्तने स्थिता कुमारी कीदृशी आसीत्?
 - (ग) कुमारीं विलोक्य शक्तिकुमारः किम् अचिन्तयत्?
 - (घ) अङ्गारम् विक्रीय तया कुमार्या किं क्रीतम्?
 - (ङ) कुमारी अतिथये भोजनार्थं किं दत्तवती?
 - (च) इयं कथा कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृता कश्च अस्याः प्रणेता?

2. स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

 - (क) इमान् तुषान् स्वर्णकारेभ्यो देहि।
 - (ख) तया वृद्धदासी साभिप्रायम् आलोकिता।
 - (ग) तान् तण्डुलान् क्वथितजले प्राक्षिपत्।
 - (घ) सा कन्या अतिथिं स्नानाय प्रेरितवती।

3. ‘क’ स्तम्भे दत्तानां पदानां समानार्थकं पदं ‘ख’ स्तम्भे दत्तम्। तौ यथोचितं योजयत-

‘क’

‘ख’

- | | |
|-------------|------------|
| (क) कलत्रम् | वारम्वारम् |
| (ख) पत्तनम् | तिन्तिणी |

- | | |
|-----------------|-------|
| (ग) अभ्सा | पत्नी |
| (घ) मुहुर्मुहुः | जलेन |
| (ङ) चिज्चाफलम् | नगरम् |

4. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूर्यत-

- | | |
|--|---|
| (क) सः विगलितसमृद्धिं विरलभूषणां | अपश्यत्। (कुमारीम्/कुमारम्) |
| (ख) अस्ति द्रविडेषु | नाम नगरी। (कञ्चनपुरं/काञ्ची) |
| (ग) इन्धनानि अभ्सा | कृष्णाङ्गारानपि प्रेषितवती। (शमयित्वा/प्रज्वाल्य) |
| (घ) सा कन्या धात्रीमुखेनातिथिं | प्रेरितवती। (स्नानाय/शयनाय) |
| (ङ) शिशिरवारिणा पेयमाचमनं च | । (कृतवती/दत्तवती) |

5. उदाहरणमनुसृत्य पाठात् चित्वा च समस्तपदानि लिखत-

यथा- प्र + विश् + ल्यप्	=	प्रविश्य
(क) वि + शुष् + ल्यप्	=
(ख) परि + वृत् + ल्यप्	=
(ग) उप + यम् + ल्यप्	=
(घ) प्र + क्षाल् + ल्यप्	=
(ङ) पा + एयत्	=
(च) कृ + एयत्	=

6. रेखाङ्कितानि सर्वनामपदानि कस्य कृते प्रयुक्तानि तानि लिखत-

- | |
|--|
| (क) <u>सः</u> : अष्टादशवर्षदेशीयः चिन्तामापनः। |
| (ख) <u>तस्याः</u> : अतुलितरूपसम्पदाभिभूतः शक्तिकुमारः अचिन्तयत्। |
| (ग) आसज्जति <u>मे</u> हृदयम् अस्याम् एव। |
| (घ) तया <u>अस्य</u> शयनस्य व्यवस्थापि कृता। |

7. (क) सन्धिं कुरुत-

- | | | |
|---------------------------|---|-------|
| (i) न + अस्ति + अदाराणाम् | = | |
| (ii) गुणवत् + अन्नम् | = | |

- | | | | |
|---------------|------------|---|-------|
| (iii) सा + | इयम् | = | |
| (iv) परीक्ष्य | + उद्वहामि | = | |
| (v) पुनः | + अम्भसा | = | |

(ख) निम्नलिखितशब्दानां सहायतया वाक्यप्रयोगं कुरुत-
प्रकाल्य, अम्भसा, पत्तने, मुहुर्मुहुः, चत्वरे

परियोजनाकार्यम्

शक्तिकुमारः परिणयाय स्त्रियां यत्कौशलम् अपेक्षते स्म तत् वर्तमानदेशकालदृष्ट्या समीचीनम् अस्ति न वा इति स्वविचारं स्वभाषया प्रकाशयत।

योग्यताविस्तारः

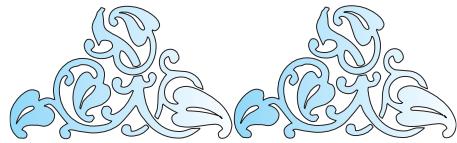
- प्यत् प्रत्यय - 'योग्य' अर्थ में प्यत् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
 पीने योग्य - पेयम् (पा + प्यत्)
 करने योग्य - कार्यम् (कृ + प्यत्)
 चुराने योग्य - चौर्यम् (चुर् + प्यत्)
 हरने योग्य - हार्यम् (हृ + प्यत्)

अम्भस् (पानी) नपुंसकलिङ्गः

विभिन्नतः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अम्भः	अम्भसी	अम्भासि
द्वितीया	अम्भः	अम्भसी	अम्भासि
तृतीया		अम्भसा	अम्भोभ्याम् अम्भोभिः
चतुर्थी	अम्भसे	अम्भोभ्याम्	अम्भोभ्यः
पंचमी	अम्भसः	अम्भोभ्याम्	अम्भोभ्यः
षष्ठी	अम्भसः	अम्भसोः	अम्भसाम्
सप्तमी	अम्भसि	अम्भसोः	अम्भस्सु

पयस् नभस् आदि शब्दों के रूप अम्भस् के समान ही चलते हैं।

3. **साभिप्रायमालोकिता-अभिप्राय** के साथ देखी गयी। सामान्य रूप से देखने तथा अभिप्रायपूर्वक देखने में अन्तर होता है। यहाँ कुमारी ने दासी को अभिप्राय के साथ देखा है ताकि दासी उनके अभिप्राय को समझ ले। दासी ने कुमारी की उस दृष्टि के अभिप्राय को भलीभौंति समझ लिया है। यहाँ कुमारी का दासी को देखने का अभिप्राय था कि वणिकपुत्र को यह उत्तर देना कि मुझमें इस कार्य को करने का कौशल है अर्थात् मैं यह काम कर सकती हूँ इसलिए तुम इनके हाथ से धान की पोटली ले लो।
4. **सेयमाकृतिर्न शीलविरोधिनी-**यह आकृति शीलविरोधिनी नहीं है। अर्थात् यह शीलवती बालिका है, इसके चेहरे तथा भावभंगिमा को देखकर इसकी सच्चरित्रिता का आभास हो जाता है फिर भी केवल मन की आवाज पर आँखें मूँद कर विश्वास करना ठीक नहीं।
5. **लवित्वा वलूम् छेदने + क्लवा (सेट्) गुण अवादेशः।**



तृतीयः पाठः

शिशुलालनम्

प्रस्तुत पाठ संस्कृतवाङ्मय के प्रसिद्ध नाटक ‘कुन्दमाला’ के पंचम अङ्क से सम्पादित कर लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध नाटककार दिड्नाग हैं। इस नाटकांश में राम कुश और लव को सिंहासन पर बैठाना चाहते हैं किन्तु वे दोनों अतिशालीनतापूर्वक मना करते हैं। सिंहासनारूढ़ राम कुश और लव के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर उन्हें अपनी गोद में बैठा लेते हैं और आनन्दित होते हैं। पाठ में शिशु स्नेह का अत्यन्त मनोहारी वर्णन किया गया है।

(सिंहासनस्थः रामः। ततः प्रविशतः विदूषकेनोपदिश्यमानमार्गौं तापसौ कुशलवौ)

विदूषकः - इत इत आर्यौ!

कुशलवौ - (रामस्य समीपम् उपसृत्य प्रणम्य च) अपि कुशलं महाराजस्य?

रामः - युष्मद्वर्षनात् कुशलमिव। भवतोः किं वयमत्र कुशलप्रश्नस्य भाजनम्
एव, न पुनरतिथिजनसमुचितस्य कण्ठाश्लेषस्य। (परिष्वज्य) अहो
हृदयग्राही स्पर्शः।



(आसनार्धमुपवेशयति)

- उभौ - राजासनं खल्वेतत्, न युक्तमध्यासितुम्।
- रामः - सव्यवधानं न चारित्रलोपाया तस्मादङ्कः - व्यवहितमध्यास्यतां सिंहासनम्।
(अङ्कमुपवेशयति)
- उभौ - (अनिच्छां नाटयतः) राजन्!
अलमतिदाक्षिण्येन।
- रामः - अलमतिशालीनतया।
भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद्
गुणमहतामपि लालनीय एव।
ब्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्
पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम्॥
- रामः - एष भवतोः सौन्दर्यावलोकजनितेन कौतूहलेन पृच्छामि-क्षत्रियकुल-
पितामहयोः सूर्यचन्द्रयोः को वा भवतोर्वशस्य कर्ता?
- लवः - भगवन् सहस्रदीधितिः।
- रामः - कथमस्मत्समानाभिजनौ संवृत्तौ?
- विदूषकः - किं द्वयोरप्येकमेव प्रतिवचनम्?
- लवः - भ्रातरावावां सोदयौ।
- रामः - समरूपः शरीरसन्निवेशः। वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्।
- लवः - आवां यमलौ।
- रामः - सम्प्रति युज्यते। किं नामधेयम्?
- लवः - आर्यस्य वन्दनायां लव इत्यात्मानं श्रावयामि (कुशं निर्दिश्य) आर्योऽपि
गुरुचरणवन्दनायाम्
- कुशः - अहमपि कुश इत्यात्मानं श्रावयामि।
- रामः - अहो! उदात्तरम्यः समुदाचारः।
किं नामधेयो भवतोर्गुरुः?

- लवः - ननु भगवान् वाल्मीकिः।
- रामः - केन सम्बन्धेन?
- लवः - उपनयनोपदेशेन।
- रामः - अहमत्रभवतोः जनकं नामतो वेदितुमिच्छामि।
- लवः - न हि जानाम्यस्य नामधेयम्। न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति।
- रामः - अहो माहात्म्यम्।
- कुशः - जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।
- रामः - कथ्यताम्।
- कुशः - निरनुक्रोशो नाम....
- रामः - वयस्य, अपूर्वं खलु नामधेयम्।
- विदूषकः - (विचिन्त्य) एवं तावत् पृच्छामि निरनुक्रोश इति क एवं भणति?
- कुशः - अम्बा।
- विदूषकः - किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?
- कुशः - यद्यावयोर्बालभावजनितं कञ्चिदविनयं पश्यति तदा एवम् अधिक्षिपति-
निरनुक्रोशस्य पुत्रौ, मा चापलम् इति।
- विदूषकः - एतयोर्यदि पितुर्निरनुक्रोश इति नामधेयम् एतयोर्जननी तेनावमानिता
निर्वासिता एतेन वचनेन दारकौ निर्भर्त्संयति।
- रामः - (स्वगतम्) धिङ् मामेवं भूतम् सा तपस्विनी मल्कृतेनापराधेन स्वापत्यमेवं
मन्युगर्भेरक्षरैर्निर्भर्त्संयति।
(सवाष्मवलोकयति)
- रामः - अतिदीर्घः प्रवासोऽयं दारुणश्च। (विदूषकमवलोक्य जनान्तिकम्)
कुतूहलेनाविष्टो मातरमनयोर्नामितो वेदितुमिच्छामि। न युक्तं च
स्त्रीगतमनुयोक्तुम्, विशेषतस्तपोवने। तत् कोऽत्राभ्युपायः?

- विदूषकः** - (जनान्तिकम्) अहं पुनः पृच्छामि। (प्रकाशम्) किं नामधेया युवयोर्जननी?
- लवः** - तस्याः द्वे नामनी।
- विदूषकः** - कथमिव?
- लवः** - तपोवनवासिनो देवीति नामाह्यन्ति, भगवान् वाल्मीकिर्वधूरिति।
- रामः** - अपि च इतस्तावद् वयस्य!
मुहूर्त्तमात्रम्।
- विदूषकः** - (उपसृत्य) आज्ञापयतु भवान्।
- रामः** - अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृत्तान्तः? (नेपथ्ये)
- इयती वेला सञ्जाता रामायणगानस्य नियोगः किमर्थं न विधीयते?
- उभौ** - राजन्! उपाध्यायदूतोऽस्मान् त्वरयति।
- रामः** - मयापि सम्माननीय एव मुनिनियोगः। तथाहि-
भवन्तौ गायन्तौ कविरपि पुराणो व्रतनिधिर्
गिरां सन्दर्भोऽयं प्रथममवतीर्णो वसुमतीम्।
कथा चेयं श्लाघ्या सरसिरुहनाभस्य नियतं,
पुनाति श्रोतारं रमयति च सोऽयं परिकरः॥
वयस्य! अपूर्वोऽयं मानवानां सरस्वत्यवतारः, तदहं सुहृज्जनसाधारणं
श्रोतुमिच्छामि। सन्निधीयन्तां सभासदः, प्रेष्यतामस्मदन्तिकं सौमित्रिः,
अहमप्येतयोश्चरासनपरिखेदं विहरणं कृत्वा अपनयामि।
- (इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

शब्दार्थः

उत्थाय	-	उत्थितो भूत्वा	-	उठकर
अलङ्क्रियते	-	विभूष्यते	-	सुशोभित होता है
पितामहः	-	पितुःपिता	-	पिता के पिता
सहस्रदीधितिः	-	सूर्यः	-	सूर्य
कण्ठाश्लेषस्य	-	कण्ठे आश्लेषस्य	-	गले लगाने का
परिष्वज्य	-	आलिङ्गनं कृत्वा	-	आलिङ्गन करके
विचिन्त्य	-	विचार्य	-	विचार करके
अनभिज्ञः	-	अपरिचितः	-	नहीं जानने वाला/अनजान
अध्यासितुम्	-	उपवेष्टुम्	-	बैठने के लिए
सव्यवधानम्	-	व्यवधानेन सहितम्	-	रुकावट सहित
अध्यास्यताम्	-	उपविश्यताम्	-	बैठिये
अलमतिदाक्षिण्येन	-	अलमतिकौशलेन	-	अत्यधिक दक्षता, अधिक कुशलता नहीं करें
अङ्कम्	-	क्रोडम्	-	गोद में
हिमकरः	-	चन्द्रः	-	चन्द्रमा
पशुपतिः	-	शिवः	-	शिव
केतक-छद्मत्वम्	-	केतकस्य छद्मत्वम्	-	केतकी (केवड़े) के पुष्प से बना मस्तक का शेखर (जूड़ा)
आत्मगतम्	-	स्वगतम्	-	मन ही मन
समानाभिजनौ	-	समानकुलोत्पन्नौ	-	एक कुल में पैदा होने वाले
संवृत्तौ	-	संजातौ	-	हो गये
प्रतिवचनम्	-	उत्तरम्	-	उत्तर
सोदर्यो	-	सहोदरौ	-	सहोदर/सगे भाई

यमलौ	-	युगलौ	-	जुड़वा
शरीरसन्निवेशः	-	अङ्गं रचनाविन्यासः	-	शरीर की बनावट
उदात्तरम्यः	-	अत्यन्तं रमणीयः	-	अत्यधिक मनोहर
समुदाचारः	-	शिष्टाचारः	-	शिष्टाचार
उपनयनोपदेशेन	-	उपनयनस्य उपदेशेन (उपनयन-संस्कारदीक्षया)	-	उपनयन की दीक्षा के कारण
नामधेयम्	-	नाम	-	नाम
निरनुक्रोशः	-	निर्दयः	-	दया रहित
बयस्य	-	मित्र	-	मित्र
भणति	-	कथयति	-	कहता है
अम्बा	-	जननी	-	माता
उत्	-	अथवा	-	अथवा
प्रकृतिस्था	-	सामान्यं मनस्थिति	-	स्वाभाविक रूप से
अधिक्षिपति	-	अधिक्षेपं करोति	-	फटकारती है
चापलम्	-	चपलताम्	-	चंचलता
अवमानिता	-	तिरस्कृता	-	अपमानित
दारकौ	-	पुत्रौ	-	पुत्र
निर्भर्त्संयति	-	तर्जयति	-	धमकाती है
निःश्वस्य	-	दीर्घं श्वासं गृहीत्वा	-	दीर्घं श्वास लेकर
स्वापत्यम्	-	स्वसन्ततिम्	-	अपनी सन्तान की
अन्वय	-	गुणमहताम् अपि वयोऽनुरोधात् शिशुजनः लालनीयः एव भवति। बालभावात् हि हिमकरः अपि पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम् व्रजति।		
भाव	-	अत्यधिक गुणी लोगों के लिए भी छोटी उम्र के कारण बालक लालनीय ही होता है। चन्द्रमा बालभाव के कारण ही शङ्कर के मस्तक का आभूषण बनकर केतकी पुष्पों से निर्मित चूड़ा की भाँति शोभित होता है।		

- | | |
|-------|---|
| अन्वय | - भवन्तौ गायन्तौ, पुराणः व्रतनिधिः कविः अपि, वसुमतीम् प्रथमं अवतीर्णः गिराम्
अयं सन्दर्भः, सरसिस्तुहनाभस्य च इयं श्लाघ्या कथा, सः च अयं परिकरः नियतं
श्रोतारं पुनाति रमयति च। |
| भाव | - भगवान् वाल्मीकि द्वारा निबद्ध पुराणपुरुष की कथा, कुश लव द्वारा श्री राम को
सुनायी जानी थी, उसी की सूचना देते हुए नेपथ्य से कुश और लव को बिना
समय नष्ट किये अपने कर्तव्य का पालन करने का निर्देश दिया जाता है। दोनों
राम से आज्ञा लेकर जाना चाहते हैं तब श्री राम उपर्युक्त श्लोक के माध्यम से
उस रचना का सम्मान करते हैं। |

आप दोनों (कुश और लव) इस कथा का गान करने वाले हैं, तपोनिधि पुराण मुनि (वाल्मीकि) इस रचना के कवि हैं, धरती पर प्रथम बार अवतरित होने वाला स्फुट वाणी का यह
काव्य है और इसकी कथा कमलनाभि विष्णु से सम्बद्ध है इस प्रकार निश्चय ही यह संयोग
श्रोताओं को पवित्र और आनन्दित करने वाला है।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-
 - (क) रामाय कुशलवयोः कण्ठाश्लेषस्य स्पर्शः कीदूशः आसीत्?
 - (ख) रामः लवकुशौ कुत्र उपवेशयितुम् कथयति?
 - (ग) बालभावात् हिमकरः कुत्र विराजते?
 - (घ) कुशलवयोः वंशस्य कर्ता कः?
 - (ङ) केन सम्बन्धेन वाल्मीकिः कुशलवयोः गुरुः आसीत्?
 - (च) कुशलवयोः मातरं वाल्मीकिः केन नाम्ना आह्वयति?
2. रेखांडितेषु पदेषु विभक्तिकारणं निर्दिशत-
 - (क) राजन्! अलम् अतिदाक्षिण्येन।
 - (ख) रामः लवकुशौ आसनार्थम् उपवेशयति।
 - (ग) धिड् माम् एवंभूतम्।
 - (घ) अङ्गवहितम् अध्यास्यतां सिंहासनम्।
 - (ङ) अलम् अतिविस्तरेण।

3. मञ्जूषातः पर्यायद्वयं चित्वा पदानां समक्षं लिखत-

शिवः शिष्टाचारः शशिः चन्द्रशेखरः सुतः इदानीम्
अधुना पुत्रः सूर्यः सदाचारः निशाकरः भानुः

(क) हिमकरः	-
(ख) सम्प्रति	-
(ग) समुदाचारः	-
(घ) पशुपतिः	-
(ङ) तनयः	-
(च) सहस्रदीधितिः	-

4. उदाहरणमनुसृत्य अथोलिखितेषु पदेषु प्रयुक्त-प्रकृति-प्रत्ययज्ञ लिखत-

यथा- आसनम् - आस् + ल्युट् प्रत्ययः

पदानि	प्रकृतिः	प्रत्ययः
(क) युक्तम्	-	+
(ख) भाजनम्	-	+
(ग) शालीनता	-	+
(घ) लालनीयः	-	+
(ङ) छदत्वम्	-	+
(च) सन्निहितः	-	+
(छ) सम्माननीया	-	+

5. विशेषण-विशेष्यपदानि योजयत-

यथा- विशेषण पदानि विशेष्य पदानि

श्लाघ्या	-	कथा
(1) उदात्तरम्यः		(क) समुदाचारः
(2) अतिदीर्घः		(ख) स्पर्शः

- | | |
|----------------|-----------------------|
| (३) समरूपः | (ग) कुशलवयोः |
| (४) हृदयग्राही | (घ) प्रवासः |
| (५) कुमारयोः | (ड) कुटुम्बवृत्तान्तः |

6. (क) अधोलिखितपदेषु स्थिं कुरुत

- | | | |
|---|---|-------|
| (क) द्वयोः + अपि | - | |
| (ख) द्वौ + अपि | - | |
| (ग) कः + अत्र | - | |
| (घ) अनभिज्ञः + अहम् | - | |
| (ड) इति + आत्मानम् | - | |
| (ख) अधोलिखितपदेषु विच्छेदं कुरुत | | |
| (क) अहमप्येतयोः | - | |
| (ख) वयोऽनुरोधात् | - | |
| (ग) समानाभिजनौ | - | |
| (घ) खल्वेतत् | - | |

7. अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति कथयति-

- | कः | कम् | |
|--|-------|-------|
| (क) सव्यवधानं न चारित्र्यलोपाय। | | |
| (ख) किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था? | | |
| (ग) जानाम्यहं तस्य नामधेयम्। | | |
| (घ) तस्या द्वे नामी। | | |

योग्यताविस्तारः

नाट्य-प्रसङ्गः

कुन्दमाला के लेखक दिङ्गांग ने प्रस्तुत नाटक में रामकथा के करुण अवसाद भरे उत्तरार्ध की नाटकीय सम्भावनाओं को मौलिकता से साकार किया है। इसी कथानक पर प्रसिद्ध नाटककार

भवभूति का उत्तरामचरित भी आश्रित है। कुन्दमाला के छहों अङ्गों का दृश्यविधान वाल्मीकि-तपोवन के परिसर में ही केन्द्रित है। प्रस्तुत नाटकांश पञ्चम अङ्ग से सम्पादित कर सङ्कलित किया गया है। लव और कुश से मिलने पर राम के हृदय में उनसे आलिंगन की लालसा होती है। उनके स्पर्शसुख से अभिभूत हो राम, उन्हें अपने सिंहासन पर, अपनी गोद में बिठाकर लाड़ करते हैं। इसी भाव की पुष्टि में नाटक में यह श्लोक उद्घृत है-

भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद्
गुणमहतामपि लालनीय एव ।
ब्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्
पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम् ॥

शिशुस्नेहसमभावश्लोकाः-

अनेन कस्यापि कुलाङ्गकुरेण
स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम् ।
कां निर्वृतिं चेतसि तस्य कुर्याद्
यस्यायमङ्गकात् कृतिनः प्रस्तुः ॥

(कालिदासस्य)

अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् ।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठयते ॥

(भवभूतेः)

धूलीधूसरतनवः
क्रीडाराज्ये स्वके च रममाणाः ।
कृतमुखवाद्यविकाराः
क्रीडन्ति सुनिर्भरं बालाः ॥

(कस्यचित्)

अनियतरुदिति स्मित विराजत्
कतिपयकोमलदन्तकुङ्गमलाग्रम् ।
वदनकमलकं शिशोः स्मरामि
स्खलदसमञ्जसमञ्जुजलिपतं ते ॥



चतुर्थः पाठः

व्यायामः सर्वदा पथ्यः

प्रस्तुत पाठ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ ‘सुश्रुतसंहिता’ के चिकित्सा स्थान में वर्णित 24वें अध्याय से संकलित है। इसमें आचार्य सुश्रुत ने व्यायाम की परिभाषा बताते हुए उससे होने वाले लाभों की चर्चा की है। शरीर में सुगठन, कान्ति, स्फूर्ति, सहिष्णुता, नीरोगता आदि व्यायाम के प्रमुख लाभ हैं।

शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम् ।
तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्धनीयात् समन्ततः ॥1॥



शरीरोपचयः कान्तिर्गांत्राणां सुविभक्तता ।
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ॥2॥

श्रमक्लमपिपासोष्ण-शीतादीनां सहिष्णुता ।
आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते ॥3॥

न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित्स्थौल्यापकर्षणम् ।
न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥4॥

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति ।
स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च ॥5॥

व्यायामस्विन्नगात्रस्य पदभ्यामुद्वर्तितस्य च ।
व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगा:
वयोरूपगुणौर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम् ॥6॥

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥7॥

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ।
स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः ॥8॥

सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितैषिभिः ।
बलस्यार्थेन कर्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥9॥

हृदिस्थानास्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते ।
व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य लक्षणम् ॥10॥

वयोबलशरीराणि देशकालाशनानि च ।
समीक्ष्य कुर्याद् व्यायाममन्यथा रोगमानुयात् ॥11॥

शब्दार्थः

आयासः	-	प्रयत्नः, प्रयासः, श्रमः	-	परिश्रम
विमृद्नीयात्	-	मर्दयेत्	-	मालिश करनी चाहिए
समन्ततः	-	सर्वतः	-	पूरी तरह से
उपचयः	-	अभिवृद्धिः	-	वृद्धि

कान्तिः	-	आभा	-	चमक
गात्रम्	-	शरीरम्	-	शरीर
सुविभक्तता	-	शारीरिकं सौष्ठवम्	-	शारीरिक सौन्दर्य
दीप्ताग्नित्वम्	-	जठराग्नेः प्रवर्धनम्	-	जठराग्नि का प्रदीप्त होना अर्थात् भूख लगना
मृजा	-	स्वच्छीकरणम्	-	स्वच्छ करना
क्लमः	-	श्रमजनितं शैथिल्यम्	-	थकान
पिपासा	-	पातुम् इच्छा	-	प्यास
उष्णः	-	तापः	-	गर्मी
स्थौल्यम्	-	अतिमांसलत्वं, पीनता	-	मोटापा
अपकर्षणम्	-	दूरीकरणम्	-	दूर करना, कम करना
अर्दयन्ति	-	अर्दनं कुर्वन्ति	-	कुचल डालते हैं
अरयः	-	शत्रवः	-	शत्रुगण
आक्रम्य	-	आक्रमणं कृत्वा	-	हमला करके
जरा	-	वार्धक्यम्	-	बुढ़ापा
अभिरतस्य	-	संलग्नस्य	-	तल्लीन होने वाले का
स्विन्नगात्रस्य	-	स्वेदेन सिक्तस्य शरीरस्य	-	पसीने से लथपथ शरीर का
पदभ्याम् उद्वर्तितस्य	-	पदभ्याम् उन्नमितस्य	-	दोनों पैरों से ऊपर उठने वाले व्यायाम
वैनतेयः	-	गरुडः	-	गरुड़
उरगः	-	सर्पः	-	साँप
विदग्धम्	-	सुपक्वम्	-	भली प्रकार पके हुए
परिपच्चते	-	जीर्यते	-	पच जाता है
अहन्	-	दिवसः	-	दिन
पथ्यं	-	अनुकूलम्	-	उचित
अहरहः	-	प्रतिदिनम्	-	हर रोज
पुम्भः	-	पुरुषैः	-	पुरुषों के द्वारा
अशनानि	-	आहाराः/भोजनानि	-	भोजन

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-
 - (क) कीदृशं कर्म व्यायामसंज्ञितम् कथ्यते?
 - (ख) व्यायामात् किं किमुपजायते?
 - (ग) जरा कस्य सकाशं सहसा न समधिरोहति?
 - (घ) कियता बलेन व्यायामः कर्तव्यः?
 - (ङ) अर्धबलस्य लक्षणम् किम्?
2. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकगतेषु पदेषु तृतीयाविभक्तिं प्रयुञ्च रिक्तस्थानानि पूरयत-
यथा - व्यायामः हीनमपि सुदर्शनं करोति (गुण)
व्यायामः गुणैः हीनमपि सुदर्शनं करोति।
 - (क) व्यायामः कर्तव्यः। (बलस्यार्थ)
 - (ख) सदृशं किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणं नास्ति। (व्यायाम)
 - (ग) विना जीवनं नास्ति। (विद्या)
 - (घ) सः खञ्जः अस्ति। (चरण)
 - (ङ) सूपकारः भोजनं जिग्रति। (नासिका)
3. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-
 - (क) शरीरस्य आयासजननं कर्म व्यायामः इति कथ्यते।
 - (ख) अरयः व्यायामिनं न अर्दयन्ति।
 - (ग) आत्महितैषिभिः सर्वदा व्यायामः कर्तव्यः।
 - (घ) व्यायामं कुर्वतः विरुद्धं भोजनम् अपि परिपच्यते।
 - (ङ) गात्राणां सुविभक्तता व्यायामेन संभवति।

व्यायामः सर्वदा पथ्यः

35

4. निम्नलिखितानाम् अव्ययानाम् रिक्तस्थानेषु प्रयोगं कुरुत-
सहसा, अपि, सदृशं, सर्वदा, यदा, सदा, अन्यथा
(क) व्यायामः कर्तव्यः।
(ख) मनुष्यः सम्यकरूपेण व्यायामं करोति तदा सः स्वस्थः
तिष्ठति।
(ग) व्यायामेन असुन्दराः सुन्दराः भवन्ति।
(घ) व्यायामिनः जनस्य सकाशं वार्धक्यं नायाति।
(ङ) व्यायामेन किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणं नास्ति।
(च) व्यायामं समीक्ष्य एव कर्तव्यम् व्याधयः आयान्ति।
5. (क) अधोलिखितेषु तद्वितपदेषु प्रकृतिं/प्रत्ययं च पृथक् कृत्वा लिखत-

मूलशब्दः (प्रकृतिः)	प्रत्ययः
(क) पथ्यतमः = +
(ख) सहिष्णुता = +
(ग) अग्नित्वम् = +
(घ) स्थिरत्वम् = +
(ङ) लाघवम् = +

(ख) अधोलिखितकृदन्तपदेषु मूलधातुं प्रत्ययं च पृथक् कृत्वा लिखत-

मूलशब्दः	+	प्रत्ययः
(क) कर्तव्यः
(ख) भोजनम्
(ग) आस्थितः	आ +
(घ) स्मृतः
(ङ) समीक्ष्य	सम्
(च) आक्रम्य	आ +
(छ) जननम्

6. अधोलिखितेभ्यः पदेभ्यः उपसर्गान् पृथक् कृत्वा लिखत-

यथा-	सुदर्शनम्	-	सु	+	दर्शनम्
(क) उपजायते		+	
(ख) अपकर्षणम्		+	
(ग) अधिरोहति		+	
(घ) प्रपद्यते		+	
(ङ) सुविभक्तता		+	

7. (क) षष्ठ श्लोकस्य भावमाश्रित्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

यथा- समीपे उरगाः न एवमेव व्यायामिनः जनस्य समीपं
..... न गच्छन्ति। व्यायामः वयोरूपगुणहीनम् अपि जनम् करोति।

(ख) उदाहरणमनुसृत्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत-

कर्मवाच्यम्	कर्तृवाच्यम्
यथा-आत्महितैषिभिः व्यायामः क्रियते	आत्महितैषिणः व्यायामं कुर्वन्ति।
(1) बलवता विरुद्धमपि भोजनं पच्यते
(2) जनैः व्यायामेन कान्तिः लभ्यते
(3) मोहनेन पाठः पठ्यते
(4) लतया गीतं गीयते

(ग) 'व्यायामस्य लाभाः' इति विषयमधिकृत्य पञ्चवाक्येषु एकम् अनुच्छेदं लिखत।

योग्यताविस्तारः

- (क) सुश्रुतः आयुर्वेदस्य, 'सुश्रुतसंहिता' इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता। अस्मिन् ग्रन्थे शल्यचिकित्सायाः प्राधान्यमस्ति। सुश्रुतः शल्यशास्त्रज्ञस्य दिवोदासस्य शिष्यः आसीत्। दिवोदासः सुश्रुतं वाराणस्याम् आयुर्वेदम् अपाठयत्। सुश्रुतः दिवोदासस्य उपदेशान् स्वग्रन्थेऽलिखत्।
- (ख) उपलब्धासु आयुर्वेदीय-संहितासु 'सुश्रुतसंहिता' सर्वश्रेष्ठः शल्यचिकित्साप्रधानो ग्रन्थः। अस्मिन् ग्रन्थे 120 अध्यायेषु क्रमेण सूत्रस्थाने मौलिकसिद्धान्तानां शल्यकर्मोपयोगि-यन्त्रादीनां, निदानस्थाने

प्रमुखाणां रोगाणां, शरीरस्थाने शरीरशास्त्रस्य चिकित्सास्थाने, शल्यचिकित्सायाः कल्पस्थाने च विषाणां प्रकरणानि वर्णितानि। अस्य उत्तरतन्त्रे 66 अध्यायाः सन्ति।

- (ग) **वैनतेयमिवोरगाः** – कश्यप ऋषि की दो पत्नियाँ थीं— कद्गु और विनता। विनता का पुत्र गरुड़ था और कद्गु का पुत्र सर्प। विनता का पुत्र होने के कारण गरुड़ को वैनतेय कहा जाता है। (विनतायाः अयम् वैनतेयः, अण् प्रत्यये कृते)। गरुड़ सर्प से अधिक ताकतवर होता है, भयवश साँप गरुड़ के पास जाने का साहस नहीं करता। यहाँ व्यायाम करने वाले मनुष्य की तुलना गरुड़ से तथा व्याधियों की तुलना साँप से की गई है। जिस प्रकार गरुड़ के समक्ष साँप नहीं जाता। उसी प्रकार व्यायाम करने वाले व्यक्ति के पास रोग नहीं फटकते।

भाषिकविस्तारः

गुणवाचक शब्दों से भाव अर्थ में घ्यज् अर्थात् य प्रत्यय लगाकर भाववाची पदों का निर्माण किया जाता है। शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि होती है और अन्तिम अ का लोप होता है।

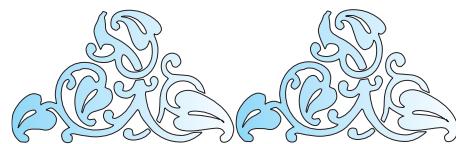
(क)	शूरस्य भावः शौर्यम्	-	शूर	+	घ्यज्
(ख)	सुन्दरस्य भावः सौन्दर्यम्	-	सुन्दर	+	घ्यज्
(ग)	सुखस्य भावः सौख्यम्	-	सुख	+	घ्यज्
(घ)	विदुषः भावः वैदुष्यम्	-	विद्वस्	+	घ्यज्
(ङ)	मधुरस्य भावः माधुर्यम्	-	मधुर	+	घ्यज्
(च)	स्थूलस्य भावः स्थौल्यम्	-	स्थूल	+	घ्यज्
(छ)	अरोगस्य भावः आरोग्यम्	-	अरोग	+	घ्यज्
(ज)	सहितस्य भावः साहित्यम्	-	सहित	+	घ्यज्

थाल्-प्रत्ययः— ‘प्रकार’ अर्थ में थाल् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

जैसे-	तेन प्रकारेण	-	तथा
	येन प्रकारेण	-	यथा
	अन्येन प्रकारेण	-	अन्यथा
	सर्व प्रकारेण	-	सर्वथा
	उभय प्रकारेण	-	उभयथा

भावविस्तारः

- (क) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्
- (ख) लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते॥
- (ग) यथा शरीरस्य रक्षायै उचितं भोजनम्, उचितश्च व्यवहारः आवश्यकोऽस्ति तथैव शरीरस्य
स्वास्थ्याय व्यायामः अपि आवश्यकः।
- (घ) युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥
- (ङ) पक्षिणः आकाशे उड्डीयन्ते तेषाम् उड्डयनमेव तेषां व्यायामः। पश्वोऽपि इतस्ततः पलायन्ते,
पलायनमेव तेषां व्यायामः। शैशवे शिशुः स्वहस्तपादौ चालयति, अयमेव तस्य व्यायामः।
वि+आ+यम् धातोः घञ् प्रत्ययात् निष्पन्नः व्यायाम शब्दः विस्तारस्य विकासस्य च
वाचकः। यतो हि व्यायामेन अङ्गानां विकासः भवति। अतः सुखपूर्वकं जीवनं यापयितुं
मनुष्यैः नित्यं व्यायामः करणीयः।



पञ्चमः पाठः

बुद्धिर्बलवती सदा

प्रस्तुत पाठ शुकसप्ततिः नामक प्रसिद्ध कथाग्रन्थ से सम्पादित कर लिया गया है। इसमें अपने दो छोटे-छोटे पुत्रों के साथ जंगल के रास्ते से पिता के घर जा रही बुद्धिमती नामक नारी के बुद्धिकौशल को दिखाया गया है जो सामने आए हुए शेर को डग कर भगा देती है। इस कथाग्रन्थ में नीतिनिपुण शुक और सारिका की कहानियों के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से सद्वृत्ति का विकास कराया गया है।

अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसतिस्म। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धार्ष्यत् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद—“कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? अयमेकस्तावद्विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।”



इति श्रुत्वा व्याघ्रमारी काचिदियमिति मत्वा व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्टः।

निजबुद्ध्या विमुक्ता सा भयाद् व्याघ्रस्य भामिनी।
अन्योऽपि बुद्धिमाल्लोके मुच्यते महतो भयात्॥

भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चित् धूर्तः शृगालः हसन्नाह— “भवान् कुतः भयात् पलायितः?”

व्याघ्रः— गच्छ, गच्छ जम्बुक! त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्। यतो व्याघ्रमारीति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारब्धः परं गृहीतकरजीवितो नष्टः शीघ्रं तदग्रतः।

शृगालः— व्याघ्र! त्वया महत्कौतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि?

व्याघ्रः— प्रत्यक्षमेव मया सात्मपुत्रावेकैकशो मामतुं कलहायमानौ चपेटया प्रहरन्ती दृष्ट्वा।

जम्बुकः— स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्। व्याघ्र! तव पुनः तत्र गतस्य सा सम्मुखमपीक्षते यदि, तर्हि त्वया अहं हन्तव्यः इति।

व्याघ्रः— शृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्।

जम्बुकः— यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्। स व्याघ्रः तथाकृत्वा काननं ययौ। शृगालेन सहितं पुनरायान्तं व्याघ्रं दूरात् दृष्ट्वा बुद्धिमती



चिन्तितवती-जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् कथं मुच्यताम्? परं प्रत्युत्पन्नमतिः सा जम्बुकमाक्षिपन्त्यङ्गुल्या तर्जयन्त्युवाच—
रे रे धूर्त त्वया दत्तं महं व्याघ्रत्रयं पुरा।
विश्वास्याद्यैकमानीय कथं यासि वदाधुना॥

इत्युक्त्वा धाविता तूर्णं व्याघ्रमारी भयङ्करा।
व्याघ्रोऽपि सहसा नष्टः गलबद्धशृगालकः॥

एवं प्रकारेण बुद्धिमती व्याघ्रजाद् भयात् पुनरपि मुक्ताऽभवत्। अत एव
उच्यते-

बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा॥

शब्दार्थः

भायी	-	पत्नी	-	पत्नी
पुत्रद्वयोपेता	-	पुत्रद्वयेन सहिता	-	दोनों पुत्रों के साथ
उपेता	-	युक्ता	-	युक्त
कानने	-	वने	-	जंगल में
ददर्श	-	अपश्यत्	-	देखा
धाष्ट्यात्	-	धृष्टभावात्	-	ठिठाई से
चपेटया	-	करप्रहरेण	-	थप्पड़ से
प्रहृत्य	-	चपेटिकां दत्वा	-	थप्पड़ मारकर
जगाद्	-	उक्तवती	-	कहा
कलहम्	-	विवादम्	-	झगड़ा
विभज्य	-	विभक्तं कृत्वा	-	अलग-अलग करके (बाँटकर)
लक्ष्यते	-	अन्विष्यते	-	देखा जाएगा, ढूँढ़ा जाएगा
व्याघ्रमारी	-	व्याघ्रं मारयति (हन्ति) इति	-	बाघ को मारने वाली
नष्टः	-	मृतः, पलायितः	-	भाग गया
भामिनी	-	भामिनी, रूपवती स्त्री	-	रूपवती स्त्री

जम्बुकः	-	शृगालः	-	सियार
गूढप्रदेशम्	-	गुप्तप्रदेशम्	-	गुप्त प्रदेश में
गृहीतकरजीवितः	-	हस्ते प्राणनीत्वा	-	हथेली पर प्राण लेकर
आवेदितम्	-	विज्ञापितम्	-	बताया
प्रत्यक्षम्	-	समक्षम्	-	सामने
सात्मपुत्रौ	-	सा आत्मनः पुत्रौ	-	वह अपने दोनों पुत्रों को
एकैकशः	-	एकम् एकं कृत्वा	-	एक एक करके
अल्तुम्	-	भक्षयितुम्	-	खाने के लिए
कलहायमानौ	-	कलहं कुर्वन्तौ	-	झगड़ा करते हुए (दो) को
प्रहरन्ती	-	प्रहारं कुर्वन्ती	-	मारती हुई
ईक्षते	-	पश्यति	-	देखती है
वेला	-	समयः	-	शर्त
आक्षिपन्ती	-	आक्षेपं कुर्वन्ती	-	आक्षेप करती हुई, झिड़कती हुई, भर्त्सना करती हुई
तर्जयन्ती	-	तर्जनं कुर्वन्ती	-	धमकाती हुई, डॉटती हुई
विश्वास्य	-	समाश्वस्य	-	विश्वास दिलाकर
तूर्णम्	-	शीघ्रम्	-	जल्दी, शीघ्र
भयङ्करा	-	भयं करोति इति	-	भयोत्पादिका
गलबद्ध-शृगालकः	-	गले बद्धशृगालः यस्य सः	-	गले में बंधे हुए शृगाल वाला

अन्तिमस्य श्लोकस्य अन्वयः-

रे रे धूर्त! त्वया महां पुरा व्याघ्रत्रयं दत्तम्। विश्वास्य (अपि) अद्य एकम् आनीय कथं यासि इति अधुना वद। इति उक्त्वा भयङ्करा व्याघ्रमारी तूर्णं धाविता। गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः अपि सहसा नष्टः। हे तन्वि! सर्वदा सर्वकार्येषु बुद्धिर्बलवती।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-
(क) बुद्धिमती केन उपेता पितृगृहं प्रति चलिता?
(ख) व्याग्रः किं विचार्यं पलायितः?
(ग) लोके महतो भयात् कः मुच्यते?
(घ) जम्बुकः किं वदन् व्याग्रस्य उपहासं करोति?
(ङ) बुद्धिमती शृगालं किम् उक्तवती?
2. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-
(क) तत्र राजसिंहो नाम राजपुत्रः वसतिस्म।
(ख) बुद्धिमती चण्डेटया पुत्रौ प्रहतवती।
(ग) व्याघ्रं दृष्ट्वा धूर्तः शृगालः अवदत्।
(घ) त्वम् मानुषात् विभेषि।
(ङ) पुरा त्वया मह्यं व्याग्रत्रयं दत्तम्।
3. उदाहरणमनुसृत्य कर्तरि प्रथमा विभक्तेः क्रियायाज्ञ्यं ‘कृतवतु’ प्रत्ययस्य प्रयोगं कृत्वा वाच्यपरिवर्तनं कुरुत-
यथा-तया अहं हन्तुम् आरब्धः - सा मां हन्तुम् आरब्धवती।
(क) मया पुस्तकं पठितम्। -
(ख) रामेण भोजनं कृतम्। -
(ग) सीतया लेखः लिखितः। -
(च) अश्वेन तृणं भुक्तम्। -
(ङ) त्वया चित्रं दृष्टम्। -
4. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमेण संयोजयत-
(क) व्याग्रः व्याग्रमारी इयमिति मत्वा पलायितः।
(ख) प्रत्युत्पन्नमतिः सा शृगालं आक्षिपन्ती उवाच।

- (ग) जम्बुकृतोत्साहः व्याघ्रः पुनः काननम् आगच्छत्।
- (घ) मार्गे सा एकं व्याघ्रं अपश्यत्।
- (ङ) व्याघ्रं दृष्ट्वा सा पुत्रौ ताडयन्ती उवाच-अधुना एकमेव व्याघ्रं विभज्य भुज्यत।
- (च) बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।
- (छ) 'त्वं व्याघ्रत्रयं आनयितु' प्रतिज्ञाय एकमेव आनीतवान्।
- (ज) गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः पुनः पलायितः।

5. सन्धि/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत-

- (क) पितुर्गृहम् - +
- (ख) एकैकः - +
- (ग) - अन्यः + अपि
- (घ) - इति + उक्त्वा
- (ङ) - यत्र + आस्ते

6. (क) अधोलिखितानां पदानाम् अर्थः कोष्ठकात् चित्वा लिखत-

- (क) ददर्श - (दर्शितवान्, दृष्टवान्)
- (ख) जगाद् - (अकथयत्, अगच्छत्)
- (ग) ययौ - (याचितवान्, गतवान्)
- (घ) अतुम् - (खादितुम्, आविष्कर्तुम्)
- (ङ) मुच्यते - (मुक्तो भवति, मग्नो भवति)
- (च) ईक्षते - (पश्यति, इच्छति)

(ख) पाठात् चित्वा पर्यायपदं लिखत-

- (क) वनम् -
- (ख) शृगालः -
- (ग) शीघ्रम् -
- (घ) पत्नी -
- (ङ) गच्छसि -

7. प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत-

(क) चलितः	-
(ख) नष्टः	-
(ग) आवेदितः	-
(घ) दृष्टः	-
(ङ) गतः	-
(च) हतः	-
(छ) पठितः	-
(ज) लब्धः	-

परियोजनाकार्यम्

बुद्धिमत्याः स्थाने आत्मानं परिकल्प्य तद्भावनां स्वभाषया लिखत।

योग्यताविस्तारः

भाषिकविस्तारः

ददर्श-दृश् धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

विभेषि 'भी' धातु, लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

प्रहरन्ती - प्र + ह धातु, शत्रृ प्रत्यय, स्त्रीलिङ्ग।

गम्यताम् - गम् धातु, कर्मवाच्य, लोट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

ययौ - 'या' धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।

यासि - गच्छसि।

समास

गलबद्ध शृगालकः - गले बद्धः शृगालः यस्य सः।

प्रत्युत्पन्नमतिः - प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः।

जम्बुककृतोत्साहात् - जम्बुकेन कृतः उत्साहः - जम्बुककृतोत्साहः तस्मात्।

पुत्रद्वयोपेता - पुत्रद्वयेन उपेता।

भयाकुलचित्तः - भयेन आकुलः चित्तम् यस्य सः।

- | | | |
|---------------|---|---------------------------|
| व्याघ्रमारी | - | व्याघ्रं मारयति इति। |
| गृहीतकरजीवितः | - | गृहीतं करे जीवितं येन सः। |
| भयङ्करा | - | भयं करोति या इति। |

ग्रन्थ-परिचय – शुकसप्ततिः के लेखक और काल के विषय में यद्यपि भ्रान्ति बनी हुई है, तथापि इसका काल 1000 ई. से 1400 ई. के मध्य माना जाता है। हेमचन्द्र ने (1088-1172) में शुकसप्ततिः का उल्लेख किया है। चौदहवीं शताब्दी में फारसी भाषा में ‘तूतिनामह’ नाम से अनूदित हुआ था।

शुकसप्ततिः का ढाँचा अत्यन्त सरल और मनोरंजक है। हरिदत नामक सेठ का मदनविनोद नामक एक पुत्र था। वह विषयासक्त और कुमार्गामी था। सेठ को दुःखी देखकर उसके मित्र त्रिविक्रम नामक ब्राह्मण ने अपने घर से नीतिनिपुण शुक और सारिका लेकर उसके घर जाकर कहा-इस सप्तलीक शुक का तुम पुत्र की भाँति पालन करो। इसका संरक्षण करने से तुम्हारा दुख दूर होगा। हरिदत ने मदनविनोद को वह तोता दे दिया। तोते की कहानियों ने मदनविनोद का हृदय परिवर्तन कर दिया और वह अपने व्यवसाय में लग गया।

व्यापार प्रसंग में जब वह देशान्तर गया तब शुक ने अपनी मनोरंजक कहानियों से उसकी पत्नी का तब तक विनोद करता रहा जब तक उसका पति वापस नहीं आ गया। संक्षेप में शुकसप्ततिः अत्यधिक मनोरंजक कथाओं का संग्रह है।

हन् (मारना) धातोः रूपम्।

लट्टकारः

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हन्ति	हन्ति
मध्यमपुरुषः	हन्सि	हथः
उत्तमपुरुषः	हन्मि	हन्वः

लट्टकारः

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हनिष्यति	हनिष्यतः
मध्यमपुरुषः	हनिष्यसि	हनिष्यथः
उत्तमपुरुषः	हनिष्यामि	हनिष्यावः

लड्लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अहन्	अहताम्	अहत
मध्यमपुरुषः	अहः	अहतम्	अहत
उत्तमपुरुषः	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लोट्लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हन्तु	हताम्	घन्तु
मध्यमपुरुषः	जहि	हतम्	हत
उत्तमपुरुषः	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ्गलकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यमपुरुषः	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तमपुरुषः	हन्याम्	हन्याव	हन्याम



षष्ठः पाठः

सुभाषितानि

संस्कृत कृतियों के जिन पद्यों या पद्यांशों में सार्वभौम सत्य को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उन पद्यों को सुभाषित कहते हैं। प्रस्तुत पाठ ऐसे 10 सुभाषितों का संग्रह है जो संस्कृत के विभिन्न ग्रंथों से संकलित हैं। इनमें परिश्रम का महत्व, क्रोध का दुष्प्रभाव, सभी वस्तुओं की उपादेयता और बुद्धि की विशेषता आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥1॥

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो,
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः ।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः,,
करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ॥2॥

निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति,
ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति ।
अकारणद्वेषि मनस्तु यस्य वै,
कथं जनस्तं परितोषयिष्यति ॥3॥

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते,
हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः।
अनुकृतमप्यूहति पण्डितोजनः,
परेङ्ग्रंतज्ञानफला हि बुद्धयः ॥4॥

क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणां,
देहस्थितो देहविनाशनाय ।
यथास्थितः काष्ठगतो हि वह्निः,
स एव वह्निर्दहते शरीरम् ॥5॥

मृगा मृगैः सङ्गमनुब्रजन्ति,
गावश्च गोभिः तुरगास्तुरङ्गैः ।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः,
समान-शील-व्यसनेषु सख्यम् ॥6॥

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः ।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते ॥7॥

अमन्त्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम् ।
अयोग्यः पुरुषः नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः ॥8॥

संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा ॥9॥

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम् ।
अश्वश्चेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः ॥10॥

शब्दार्थः

अवसीदति	-	दुःखम् अनुभवति	-	दुःखी होता है
वेत्ति	-	जानाति	-	जानता है
वायसः	-	काकः	-	कौआ
करी	-	गजः	-	हाथी
निपित्तः	-	कारणम्	-	कारण
प्रकुप्यति	-	अतिकोपं करोति	-	अत्यधिक क्रोध करता है
ध्रुवं	-	निश्चितम्	-	निश्चित रूप से
अपगमे	-	समाप्ते	-	समाप्त होने पर
प्रसीदति	-	प्रसन्नः भवति	-	प्रसन्न होता है
अकारणद्वेषिमनः	-	अकारणं द्वेषं करोति इति	-	अकारण ही द्वेष करने वाला
		अकारणद्वेषि तद्वद्मनः यस्य सः	-	मन है जिसका
परितोषयिष्यति	-	परितोषं दास्यति	-	सन्तुष्ट करेगा
उदीरितः	-	उक्तः कथितः	-	कहा हुआ
गृह्यते	-	प्राप्यते	-	प्राप्त किया जाता है
हयाः	-	अश्वाः	-	घोड़े
नागाः	-	हस्तिनः	-	हाथी
ऊहति	-	निर्धारयति	-	अंदाजा लगाता है
इङ्गितज्ञानफलाः	-	इङ्गितं ज्ञानम्,	-	सङ्खेतजन्य ज्ञान रूपी फल
		इङ्गितज्ञानमेव फलं यस्याः	-	वाले
		सा, ताः	-	
पण्डितः	-	विद्वान्, बुद्धिमान्	-	बुद्धिमान्
वह्निः	-	अग्निः	-	आग
दहते	-	ज्वालयति	-	जलाता है
अनुब्रजन्ति	-	पश्चात् गच्छन्ति	-	पीछे-पीछे जाते हैं, अनुसरण करते हैं
तुरगाः	-	अश्वाः	-	घोड़े

सुधियः:	- विद्वांसः:	- विद्वान् मनीषी
व्यसनेषु	- स्वभावे	- आदत, स्वभाव में
सख्यम्	- मैत्री	- मित्रता
सेवितव्यः:	- आश्रयितव्यः	- आश्रय लेना चाहिए
दैवात्	- भाग्यात्	- भाग्य से
निवार्यते	- निवारणं क्रियते	- रोका जाता है
अमन्त्रम्	- न मन्त्रं, अमन्त्रमक्षरं इति	- मन्त्रहीन
मन्त्र	- मननयोग्यम्	- मनन योग्य/सार्थक/सारवान्
मूलम्	- अधःभागम्	- जड़
औषधम्	- औषधि+अण् (वनस्पति निर्मितम्)	- दवा, जड़ी-बूटी
योजकः:	- (युज् +ण्वुल्)	- जोड़ने वाला
सविता	- सूर्यः	- सूर्य
रक्तः:	-	- लाल
खरः:	- गर्दभः:	- गधा

श्लोकानाम् अन्वयः-

1. मनुष्याणां शरीरस्थः महान् शत्रुः आलस्यम्। उद्यमसमः बन्धुः न अस्ति यं कृत्वा (मनुष्यः) न अवसीदति।
2. गुणी गुणं वेत्ति, निर्गुणः (गुणं) न वेत्ति, बली बलं वेत्ति, निर्बलः (बलं) न वेत्ति, वसन्तस्य गुणं पिकः (वेत्ति), वायसः न (वेत्ति), सिंहस्य बलं करी (वेत्ति), मूषकः न।
3. यः निमित्तम् उद्दिश्य प्रकुप्यति सः तस्य अपगमे ध्रुवं प्रसीदति यस्य मनः अकारणद्वेषि (अस्ति) तं जनः कथं परितोषयिष्यति।
4. पशुना अपि उदीरितः अर्थः गृह्यते, हयाः नागाः च बोधिताः (भारं) वहन्ति, पण्डितः जनः अनुकृतम् अपि ऊहति बुद्धयः परेङ्गितज्ञानफलाः भवन्ति।
5. नराणां देहविनाशनाय प्रथमः शत्रुः देहस्थितः क्रोधः। यथा काष्ठगतः स्थितः वह्निः काष्ठम् एव दहते (तथैव शरीरस्थः क्रोधः) शरीरं दहते ।

6. मृगाः मृगैः सह, गावश्च गोभिः सह, तुरगाः तुरङ्गैः सह, मूर्खाः मूर्खैः सह, सुधियः सुधीभिः सह अनुव्रजन्ति। सख्यम् समानशीलव्यसनेषु (भवति)।
 7. फलच्छाया समन्वितः महावृक्षः सेवितव्यः। दैवात् यदि फलं नास्ति (वृक्षस्य) छाया केन निवार्यते।
 8. अमन्त्रम् अक्षरं नास्ति, अनौषधम् मूलं नास्ति, अयोग्यः पुरुषः नास्ति, तत्र योजकः दुर्लभः।
 9. महताम् संपत्तौ विपत्तौ च एकरूपता भवति।
- यथा-** सविता उदये रक्तः भवति, तथा अस्तमये च रक्तः भवति।
10. विचित्रे संसारे खलु किञ्चित् निरर्थकं नास्ति। अश्वः चेत् धावने वीरः, (तर्हि) भारस्य वहने खरः (वीरः) अस्ति।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-
 (क) केन समः बन्धुः नास्ति?
 (ख) वसन्तस्य गुणं कः जानाति।
 (ग) बुद्ध्यः कीदृश्यः भवन्ति?
 (घ) नराणां प्रथमः शत्रुः कः?
 (ङ) सुधियः सख्यं केन सह भवति?
 (च) अस्माभिः कीदृशः वृक्षः सेवितव्यः?
2. अधोलिखिते अन्वयद्वये रिक्तस्थानपूर्ति कुरुत-
 (क) यः उद्दिश्य प्रकुप्यति तस्या सः ध्रुवं प्रसीदति। यस्य मनः अकारणद्वेषि अस्ति, तं कथं परितोषयिष्यति?
 (ख) खलु संसारे निरर्थकम् नास्ति। अश्वः चेत् वीरः, खरः (वीरः) (भवति)
3. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत-
 (क) प्रसीदति
 (ख) मूर्खः
 (ग) बली

- | | |
|--------------|-------|
| (घ) सुलभः | |
| (ङ) संपत्तौ | |
| (च) अस्ते | |
| (छ) सार्थकम् | |
4. अधोलिखितानां वाक्यानां कृते समानार्थकान् श्लोकांशान् पाठात् चित्वा लिखत-
- (क) विद्वान् स एव भवति यः अनुकृतम् अपि तथ्यं जानाति।
 - (ख) मनुष्यः समस्वभावैः जनैः सह मित्रातां करोति।
 - (ग) परिश्रमं कुर्वाणः नरः कदापि दुःखं न प्राप्नोति।
 - (घ) महान्तः जनाः सर्वदैव समप्रकृतयः भवन्ति।
5. यथानिर्देशं परिवर्तनं विधाय वाक्यानि रचयत-
- (क) गुणी गुणं जानाति। (बहुवचने)
 - (ख) पशुः उदीरितं अर्थं गृह्णाति। (कर्मवाच्ये)
 - (ग) मृगाः मृगैः सह अनुव्रजन्ति। (एकवचने)
 - (घ) कः छायां निवारयति। (कर्मवाच्ये)
6. सधिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत-
- | | | | | | | |
|--------------|---|-------|---|----------|---|------------|
| (क) न | + | अस्ति | + | उद्यमसमः | - | |
| (ख) | + | | | | - | तस्यापगमे |
| (ग) अनुकृतम् | + | अपि | + | ऊहति | - | |
| (घ) | + | | | | - | गावश्च |
| (ङ) | + | | | | - | नास्ति |
| (च) रक्तः | + | च | + | अस्तमये | - | |
| (छ) | + | | | | - | योजकस्तत्र |
7. संस्कृतेन वाक्यप्रयोगं कुरुत-
- | | |
|---------------|-------|
| (क) वायसः | |
| (ख) निमित्तम् | |

- | | |
|------------|-------|
| (ग) सूर्यः | |
| (घ) पिकः | |
| (ङ) वहिः | |

परियोजनाकार्यम्

(क) उद्यमस्य महत्त्वं वर्णयतः पञ्चश्लोकान् लिखत।

अथवा

कापि कथा या भवखिः पठिता स्यात् यस्यां उद्यमस्य महत्त्वं वर्णितम् तां स्वभाषया लिखत।

(ख) निमित्तमुद्दिश्य यः प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति। यदि भवता कदापि ईदृशः अनुभवः कृतः तर्हि स्वभाषया लिखत।

योग्यताविस्तारः

1. तत्पुरुष समास

शरीरस्थः	-	शरीरे स्थितः
गृहस्थः	-	गृहे स्थितः
मनस्थः	-	मनसि स्थितः
तटस्थः	-	तटे स्थितः
कूपस्थः	-	कूपे स्थितः
वृक्षस्थः	-	वृक्षे स्थितः
विमानस्थः	-	विमाने स्थितः

2. अव्ययीभाव समास

निर्गुणम्	-	गुणानाम् अभावः
निर्मक्षिकम्	-	मक्षिकाणाम् अभावः

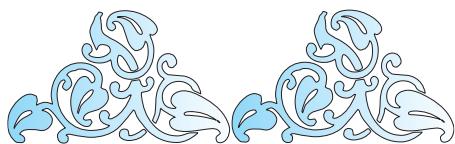
निर्जलम्	-	जलस्य अभावः
निराहारम्	-	आहारस्य अभावः

3. पर्यायवाचिपदानि-

शत्रुः	-	रिपुः, अरि:, वैरि:
मित्रम्	-	सखा, बन्धुः, सुहृद्
वहिः	-	अग्निः, दाहकः, पावकः
सुधियः	-	विद्वांसः, विज्ञाः, अभिज्ञाः
अश्वः	-	तुरणः, हयः, घोटकः
गजः	-	करी, हस्ती, दन्ती, नागः।
वृक्षः	-	द्रुमः, तरुः, महीरुहः।
सविता	-	सूर्यः, मित्रः, दिवाकरः, भास्करः।

मन्त्रः ‘मननात् त्रायते इति मन्त्रः।’

अर्थात् वे शब्द जो सोच-विचार कर बोले जाएँ। सलाह लेना, मन्त्रणा करना। मन्त्र+अच् (किसी भी देवता को सम्बोधित) वैदिक सूक्त या प्रार्थनापरक वैदिक मन्त्र, वेद का पाठ तीन प्रकार का है- यदि छन्दोबद्ध और उच्च स्वर से बोला जाने वाला है तो ‘ऋक्’ है, यदि गद्यमय और मन्दस्वर में बोला जाने वाला है तो ‘यजुस्’ है, और यदि छन्दोबद्धता के साथ गेयता है तो ‘सामन्’ है (प्रार्थनापरक) यजुस् जो किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो- ‘ओं नमः शिवाय’ आदि। पंचतंत्र में भी मंत्रणा, परामर्श, उपदेश तथा गुप्त मंत्रणा के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग हुआ है।



सप्तमः पाठः

भूकम्पविभीषिका

हमारे वातावरण में भौतिक सुख साधनों के साथ-साथ अनेकों आपदाएँ भी लगी रहती हैं। प्राकृतिक आपदाएँ जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती हैं। कभी किसी महामारी की आपदा, बाढ़ तथा सूखे की आपदा या तूफान के रूप में भयङ्कर प्रलय— ये सब हम अपने जीवन में देखते तथा सुनते रहते हैं। भूकम्प भी ऐसी ही आपदा है। जिसके बारे में यहाँ दृष्टिपात किया गया है। इस पाठ के माध्यम से यह बताया गया है कि किसी भी आपदा में बिना किसी घबराहट के, हिम्मत के साथ किस प्रकार हम अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकते हैं।



एकोत्तर द्विसहस्रखीष्टाब्दे (2001 ईस्वीये वर्षे) गणतन्त्र-दिवस-पर्वणि यदा समग्रमपि भारत राष्ट्रं नृत्य-गीतवादित्राणाम् उल्लासे मग्नमासीत् तदाकस्मादेव गुर्जर- राज्यं पर्याकुलं, विपर्यस्तम्, क्रन्दनविकलं, विपन्नज्य जातम्। भूकम्पस्य दारुण- विभीषिका समस्तमपि गुर्जरक्षेत्रं विशेषेण च कच्छजनपदं ध्वंसावशेषु परिवर्तितवती। भूकम्पस्य केन्द्रभूतं भुजनगरं तु मृत्तिकाक्रीडनकमिव खण्डखण्डम् जातम्। बहुभूमिकानि भवनानि क्षणेनैव धराशायीनि जातानि। उत्खाता विद्युदीपस्तम्भाः। विशीर्णः गृहसोपान- मार्गाः। फालद्वये विभक्ता भूमिः। भूमिगर्भादुपरि निस्सरन्तीभिः दुर्वार जलधाराभिः:-

महाप्लावनदृश्यम् उपस्थितम्। सहस्रमिता: प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृताः। ध्वस्तभवनेषु सम्पीडिता सहस्रशोऽन्ये सहायतार्थं करुणकरुणं क्रन्दन्ति स्म। हा दैव! क्षुक्षामकण्ठाः मृतप्रायाः केचन शिशवस्तु ईश्वरकृपया एव द्विग्राणि दिनानि जीवनं धारितवन्तः।

इयमासीत् भैरवविभीषिका कच्छ भूकम्पस्य। पञ्चोत्तर द्विसहस्रख्रीष्टाब्दे (2005 ईस्वीये वर्षे) अपि कश्मीर प्रान्ते पाकिस्तान देशे च धरायाः महत्कम्पनं जातम्। यस्मात्कारणात् लक्षपरिमिताः जनाः अकालकालकवलिताः। पृथ्वी कस्मात्प्रकम्पते वैज्ञानिकाः इति विषये कथयन्ति यत् पृथिव्या अन्तर्गर्भे विद्यमानाः बृहत्यः पाषाण-शिला यदा संघर्षणवशात् त्रुट्यन्ति तदा जायते भीषणं संस्खलनम्, संस्खलनजन्यं कम्पनञ्च। तदैव भयावहकम्पनं धराया उपरितलमप्यागत्य महाकम्पनं जनयति येन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते।

ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायत इति कथयन्ति भूकम्पविशेषज्ञाः। पृथिव्याः गर्भे विद्यमानोऽग्निर्यदा खनिजमृत्तिकाशिलादिसञ्चयं क्वथयति तदा तत्सर्वमेव लावारसताम् उपेत्य दुर्वारगत्या धरां पर्वतं वा विदार्य बहिर्निष्क्रामति। धूमभस्मावृतं जायते तदा गगनम्। सेल्मियश-ताप-मात्राया अष्टशताङ्कतामुपगतोऽयं लावारसो यदा नदीवेगेन प्रवहति तदा पाश्वस्थग्रामा नगराणि वा तदुदरे क्षणेनैव समाविशन्ति।

निहन्यन्ते च विवशाः प्राणिनः। ज्वालामुद्गिरन्त एते पर्वता अपि भीषणं भूकम्पं जनयन्ति।

यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम, तस्योपशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते। प्रकृति समक्षमद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामनकल्प एव तथापि भूकम्परहस्यज्ञाः कथयन्ति यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं न करणीयम्। तटबन्धं निर्माय बृहन्मात्रं नदीजलमपि नैकस्मिन् स्थले पुञ्जीकरणीयम् अन्यथा असन्तुलनवशाद् भूकम्पस्मभवति। वस्तुतः शान्तानि एव पञ्चतत्त्वानि क्षितिजलपावकसमीरगगनानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते। अशान्तानि खलु तान्येव महाविनाशम् उपस्थापयन्ति।

शब्दार्थः

पर्याकुलम्	— परितःव्याकुलम्	— चारों ओर से बेचैन
विपर्यस्तम्	— अस्तव्यस्तम्	— अस्तव्यस्त
विपन्नम्	— विपत्तियुक्तम्	— (विपत्तिग्रस्त) मुसीबत में
दारुणविभीषिका	— भयङ्करत्रासः	— भययुक्त
ध्वंसावशेषु	— नाशोपरान्तम् अवशिष्टेषु	— विनाश के बाद बची हुई वस्तु
मृत्तिकाक्रीडनकमिव	— मृत्तिकायाः क्रीडनकम् इव	— मिट्टी के खिलौने के समान
बहुभूमिकानि भवनानि	— बहव्यः भूमिकाः येषु तानि भवनानि	— बहुमंजिले मकान
उत्खाताः	— उत्पटिताः	— उखड़ गये
विशीर्णाः	— नष्टाः	— बिखर गये
फालद्वये	— खण्डद्वये	— दो खण्डों में
निस्परन्तीभिः	— निर्गच्छन्तीभिः	— निकलती हुई
दुर्वार	— दुःखेन निवारयितुं योग्यम्	— जिनको हटाना कठिन है
महाप्लावनम्	— महत् प्लावनम्	— विशाल बाढ़
क्षुत्क्षामकण्ठः	— क्षुधा क्षामः कण्ठाः येषाम् ते	— भूख से दुर्बल कण्ठ वाले
कालकवलिताः	— दिवंगताः	— मृत्यु को प्राप्त हुए
संघर्षणवशात् संस्खलनम्	— विचलनम्	— स्थान से हटना
जनयति	— उत्पन्नं करोति	— उत्पन्न करती है
भूकम्पविशेषज्ञाः	— भूवः कम्पनरहस्यस्य ज्ञातारः	— भूमि के कम्पन के रहस्य को जानने वाले
खनिज	— उत्खननात् प्राप्तं द्रव्यम्	— भूमि को खोदने से प्राप्त वस्तु
क्वथयति	— उत्पत्तं करोति	— उबालती है, तपाती है
विदार्य	— विदीर्णं कृत्वा, भित्वा	— फाड़कर
पाश्वस्थ-ग्रामाः	— निकटस्थ ग्रामाः	— समीप के गाँव
उदरे	— कुक्षौ	— पेट में
समाविशन्ति	— अन्तः गच्छन्ति	— समा जाती हैं

उद्गिरन्तः	— प्रकटयन्तः	— प्रकट करते हुए
उपशमनस्य	— शान्तेः	— शान्त करने का
वामनकल्प	— वामनसदृशः	— बौना
निर्माय	— निर्माणं कृत्वा	— बनाकर
पुञ्जीकरणीयम्	— संग्रहणीयम्	— इकट्ठा करना चाहिए
योगक्षेमाभ्याम्	— अप्राप्तस्य प्राप्तिः योगः प्राप्तस्य रक्षणं क्षेमः ताभ्याम्	— अप्राप्त की प्राप्ति योग है प्राप्त की रक्षा क्षेम है

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत -

- (क) समस्तराष्ट्रं कीदृक् उल्लासे मग्नम् आसीत्?
- (ख) भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दुः कः जनपदः आसीत्?
- (ग) पृथिव्याः स्खलनात् किं जायते?
- (घ) समग्रो विश्वः कैः आर्तकितः दृश्यते?
- (ङ) केषां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते?
- (च) कीदृशानि भवनानि धराशायीनि जायन्ते?

2. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं च कुरुत -

(अ) परस्वर्णसन्धिनियमानुसारम् -

- (क) किञ्च = + च
- (ख) = नगरम् + तु
- (ग) विपन्नज्व = +
- (घ) = किम् + तु
- (ङ) भुजनगरन्तु = +
- (च) = सम् + चयः

(आ) विसर्गसन्धिनियमानुसारम्-

(क) शिशवस्तु	=	+
(ख)	=	विस्फोटैः	+	अपि
(ग) सहस्रशोऽन्ये	=	+	अन्ये
(घ) विचित्रोऽयम्	=	विचित्रः	+
(ङ)	=	भूकम्पः	+	जायते
(च) वामनकल्प एव	=	+

3. (अ) 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे विलोमपदानि, तयोः संयोगं कुरुत-

क	ख
सम्पन्नम्	प्रविशन्तीभिः
ध्वस्तभवनेषु	सुचिरेणैव
निस्सरन्तीभिः	विपन्नम्
निर्माय	नवनिर्मित भवनेषु
क्षणेनैव	विनाश्य

(आ) 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे समानार्थकपदानि तयोः संयोगं कुरुत -

क	ख
पर्याकुलम्	नष्टाः
विशीर्णाः	क्रोधयुक्ताम्
उद्गिरन्तः	संत्रोट्य
विदार्य	व्याकुलम्
प्रकुपिताम्	प्रकटयन्तः

4. (अ) उदाहरणमनुसृत्य प्रकृति-प्रत्यययोः विभागं कुरुत-

यथा- परिवर्तितवती	-	परि	+	वृत्	+	क्तवतु	+	डीप् (स्त्री)
धृतवान्	-	+				
हसन्	-	+				

विशीर्णा	-	वि	+	शृ	+	क्त	+
प्रचलन्ती	-	+	+	शतृ	+	डीप् (स्त्री)
हतः	-	+				

(आ) पाठात् विचित्र्य समस्तपदानि लिखत-

महत् च तत् कम्पनं	=
दारुणा च सा विभीषिका	=
ध्वस्तेषु च तेषु भवनेषु	=
प्राक्तने च तस्मिन् युगे	=
महत् च तत् राष्ट्रं तस्मिन्	=

5. स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) भूकम्पविभीषिका विशेषण कच्छजनपदं ध्वंसावशेषेषु परिवर्तितवती।
- (ख) वैज्ञानिकाः कथयन्ति यत् पृथिव्याः अन्तर्गर्भं, पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते।
- (ग) विवशाः प्राणिनः आकाशे पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते।
- (घ) एतादृशी भयावहघटना गढ़वालक्षेत्रे घटिता।
- (ङ) तदिदानीम् भूकम्पकारणं विचारणीयं तिष्ठति।

6. ‘भूकम्पविषये’ पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं लिखत।

7. कोष्ठकेषु दत्तेषु धातुषु निर्देशानुसारं परिवर्तनं विधाय रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) समग्रं भारतं उल्लासे मग्नः (अस् + लट् लकारे)
- (ख) भूकम्पविभीषिका कच्छजनपदं विनष्टं (कृ + क्तवतु + डीप्)
- (ग) क्षणेनैव प्राणिनः गृहविहीनाः (भू + लड्, प्रथम पुरुष बहुवचन)
- (घ) शान्तानि पञ्चतत्त्वानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां (भू + लट्, प्रथम पुरुष बहुवचन)
- (ङ) मानवाः यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं करणीयम् न वा? (पृच्छ + लट्, प्रथम पुरुष बहुवचन)
- (च) नदीवेगेन ग्रामाः तदुदरे (सम् + आ + विश् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुष एक वचन)

योग्यताविस्तारः

भूकम्प परिचय – भूमि का कम्पन भूकम्प कहलाता है। वह बिन्दु भूकम्प का उद्गम केन्द्र कहा जाता है, जिस बिन्दु पर कम्पन की उत्पत्ति होती है। कम्पन तरंग के रूप में विविध दिशाओं में आगे चलता है। ये तरंगें सभी दिशाओं में उसी प्रकार फैलती हैं जैसे किसी शान्त तालाब में पत्थर के टुकड़ों को फेंकने से तरंगें उत्पन्न होती हैं।

धरातल पर कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ भूकम्प प्रायः आते ही रहते हैं। उदाहरण के अनुसार- प्रशान्त महासागर के चारों ओर के प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, गङ्गा, ब्रह्मपुत्र का तटीय भाग इन क्षेत्रों में अनेक भूकम्प आए जिनमें से कुछ तो अत्यधिक भयावह और विनाशकारी थे। सुनामी भी एक प्रकार का भूकम्पन ही है जिसमें भूमि के भीतर अत्यन्त गहराई से तीव्र कम्पन उत्पन्न होता है। यही कम्पन समुद्र के जल को काफी ऊँचाई तक तीव्रता प्रदान करता है। फलस्वरूप तटीय क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। सुनामी का भीषण प्रकोप 20 सितम्बर 2004 को हुआ। जिसकी चपेट में भारतीय प्रायद्वीप सहित अनेक देश आ गये। क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर इन पञ्चतत्वों में सन्तुलन बनाए रखकर प्राकृतिक आपदाओं से बचा जा सकता है। इसके विपरीत असन्तुलित पञ्चतत्वों से सृष्टि विनष्ट हो सकती है?

भूकम्पविषये प्राचीनमतम्

प्राचीनैः ऋषिभिः अपि स्वस्वग्रन्थेषु भूकम्पोल्लेखः कृतः येन स्पष्टं भवति यत् भूकम्पाः प्राचीनकालेऽपि आयान्ति स्म।

यथा-

वराहसंहितायाम्-

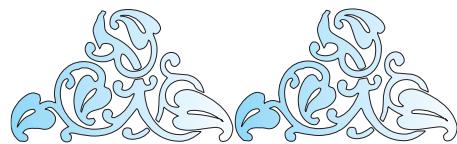
क्षितिकम्पमाहुरेके मह्यन्तर्जलनिवासिसत्त्वकृतम्
भूभारखिन्दिगजनिःश्वास समुद्भवं चान्ये।
अनिलोऽनिलेन निहितः क्षितौ पतन् सस्वनं करोत्यन्ये
केचित् त्वदृष्टकारितमिदमन्ये प्राहुराचार्याः॥

मयूरचित्रे

कदाचित् भूकम्पः श्रेयसेऽपि कल्पते। एतादृशाः अपि उल्लेखाः अस्माकं साहित्ये समुपलभ्यन्ते
यथा वारुणमण्डलमौशनसे -

प्रतीच्यां यदि कम्पेत वारुणे सप्तके गणे,
द्वितीययामे रात्रौ तु तृतीये वारुणं स्मृतम् ।
अत्र वृष्टिश्च महती शस्यवृद्धिस्तथैव च,
प्रज्ञा धर्मरताश्चैव भयरोगविवर्जिताः ॥

उल्काभूकम्पदिगदाहसम्भवः शस्यवृद्धये ।
क्षेमारोग्यसुभिक्षायै वृष्टये च सुखाय च ।
भूकम्पसमा एव अग्निकम्पः, वायुकम्पः, अम्बुकम्पः इत्येवमऽन्येऽपि भवन्ति।



अष्टमः पाठः

प्रश्नत्रयम्

प्रस्तुत कथा रूसी कथाकार लियो टाल्स्टाय की प्रसिद्ध कहानी के अंग्रेजी अनुवाद का संक्षिप्त रूप में पुनराख्यान है। यहाँ सेवा तथा परोपकार पर बल देते हुए कहा गया है कि इसके द्वारा कठोर से भी कठोर मनुष्य का हृदय-परिवर्तित हो सकता है जिसकी वर्तमान समय में मानव समाज के लिए महती आवश्यकता है।

कश्चिद् राजा स्वमनसि निरन्तरं प्रवर्तमानायाजिज्ञासायाः समाधानाय कस्मिंश्चिदाश्रमे निवसतो मुनेः पाश्वमुपागच्छत्। तदानीं मुनिः स्वकार्यसंलग्न एव राजानं यथेष्टमभ्यनन्दत्। राजा तं मुनिं प्रश्नत्रयमपृच्छत्- कः समयः श्रेष्ठः? कः पुरुषः श्रेष्ठः? किं कर्म च श्रेष्ठम्? इति। मुनिस्तु राजानं प्रति न ध्यात्वा स्वकार्यमेवाकरोत्।



तत्राश्रमे राजो निवासादिव्यवस्थामपि निर्धार्य मुनिन् किमप्यवोचत् प्रत्युत स्वकीयानि कार्याणि यथापूर्वमाचरत्। राजा पुनः पुनः तानेव प्रश्नानुपस्थाप्य मुनेरुत्तरं प्रतीक्षितवान्।

किन्तु मुनिर्न किमपि वक्तुमुत्सुकः। स च निरन्तरमाश्रमस्य कर्षणं, मार्जनं, सेचनं, तथान्यानि कार्याणि कर्तुं व्यापृतः। राजा निराशो भूत्वा प्रत्यावर्तनस्य विचारं चकार।

अथापरेद्युः राज्ञो राजधानीं प्रति प्रस्थानोत्सुकस्य पुरतः कश्चित् शस्त्राहतः श्रमक्लान्तः पुरुषः आश्रममागतः। तस्य कष्टं विलोक्य दयादीं मुनिर्यथासाध्यं तस्योपचारे प्रवृत्तः। राजापि तादृशस्य आतुरस्य दशया विकल इव मुनेस्तस्मिन् कार्ये तदादेशेन सहायतां चकार। कतिपयैरेव दिवसैरागन्तुको मुने: राज्ञश्चोपचारेण स्वस्थो जातः।

स च राजानमुवाच— मया केनापि कारणेन क्रोधाविष्टेन राजैव हन्तव्य आसीत् किन्तु मद्विचारस्य प्रकाशनाद् राजपुरुषाः मां भृशमताडयन् बन्दीकृतवन्तश्च। यथाकथमपि अत्र निरापदमाश्रममागतोऽस्मि पलायमानो बन्धनात्। अधुना भवतो व्यवहारेण कोपो मे गलितः। क्षन्तव्योऽयं वराको जनः। आज्ञापयतु महाराजः।

अथ राजानं मुनिरुवाच—“मन्ये भवदीयस्य प्रश्नत्रयस्य समाधानमस्य जनस्य परिवर्तितमानसस्य सेवयैव जातम्। मुनिः पुनरपि विशदीकुर्वन्तकथयत्- अयमेव श्रेष्ठः समयः यत्र मानवः परोपकारे कस्मिन्नपि कर्मणि वा व्यापृतः। समक्षं वर्तमानः पुरुष एव श्रेष्ठः कस्यापि सहायतां कामयमानः। सेवैव श्रेष्ठं कर्म येन हृदयपरिवर्तनमपि जायते।” राजा मुनेरुत्तरप्रदानपद्धत्या प्रमुदितः भूत्वा स्वनगरं गतः।

शब्दार्थः

प्रवर्तमानायाः	—	चलायमानाः	—	चलती हुई का
उपागच्छत्	—	समीपं गतवान्	—	निकट गया
यथेष्टम्	—	इच्छानुसारम्	—	स्वेच्छा से
अभ्यनन्दन्	—	अभिनन्दनं कृतवान्	—	स्वागत किया
प्रतीक्षितवान्	—	प्रतीक्षाम् अकरोत्	—	प्रतीक्षा की
निर्धार्य	—	निश्चितं कृत्वा	—	निश्चित करके
प्रत्यावर्तनस्य	—	प्रति+आवर्तनस्य	—	लौटने का
अपरेद्युः	—	अपरस्मिन् दिने	—	अगले दिन
पुरतः	—	समक्षम्	—	सामने

विलोक्य	—	दृष्ट्वा	—	देखकर
यथासाध्यम्	—	यथासंभवम्	—	जितना संभव था
भृशम्	—	अत्यधिकम्	—	अत्यधिक
निरापदम्	—	आपदविहीनम्	—	विपत्ति रहित
गलितः	—	समाप्तः	—	नष्ट हो गया
वराको	—	विवशः	—	बेचारा
विशदीकुर्वन्	—	विस्तारं कुर्वन्	—	विस्तार करते हुए
क्षन्तव्यः	—	क्षमा योग्यः	—	क्षमा करने योग्य
प्रवृत्तः	—	संलग्नः	—	लगा हुआ
प्रमुदितः	—	प्रकर्षेण मुदितः	—	अतीव प्रसन्न
व्यापृतः	—	कर्मणि निरतः	—	काम में लगा हुआ
चकार	—	अकरोत्	—	किया

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) राजा किमर्थं मुनेः पाश्वमुपागच्छत्?
- (ख) राजा मुनिं कान् प्रश्नान् अपृच्छत्?
- (ग) अपरेत्युः कीदृशः पुरुषः आश्रममागतः?
- (घ) पुरुषः कथं स्वस्थः जातः?
- (ङ) श्रेष्ठः समयः कः?
- (च) श्रेष्ठं कर्म किम्?

2. स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) राजा मुनिं प्रश्नत्रयमपृच्छत्।
- (ख) मुनिः स्वकार्यसंलग्न एव राजानम् अभ्यनन्दत्।
- (ग) राजा जिज्ञासायाः समाधानाय मुनेः पाश्वमगच्छत्।

- (घ) राजा प्रश्नान् उपस्थाप्य मुनेः उत्तरं प्रतीक्षितवान्।
 (ङ) राजा शस्त्राहतस्य सहायताम् अकरोत्।
3. ‘क’ स्तम्भे दत्तानां विशेषणपदानां ‘ख’ स्तम्भे दत्तैः विशेष्यैः सह संयोजनं कुरुत-
- | (क) | (ख) | उत्तराणि |
|----------------|-------------|----------|
| प्रवर्तमानायाः | मुनिः | |
| शस्त्राहतः | आश्रमम् | |
| दयार्द्रः | जिज्ञासायाः | |
| वराकः | दिवसैः | |
| कतिपयैः | पुरुषः | |
| निरापदम् | जनः | |
| स्वकीयानि | कर्म | |
| श्रेष्ठम् | कार्याणि | |
4. पाठात् समस्तपदं चित्वा विग्रह-वाक्य-समक्षं लिखत-
- | | | |
|------------------------|---|-------|
| (क) पूर्वम् अनतिक्रम्य | - | |
| (ख) शस्त्रेण आहतः | - | |
| (ग) राज्ञः पुरुषः | - | |
| (घ) महान् चासौ राजा | - | |
| (ङ) श्रमेण क्लान्तः | - | |
| (च) आपदानाम् अभावः | - | |
5. पाठात् चित्वा अव्ययपदैः रिक्तस्थानपूर्ति कुरुत-
- | | |
|---|--|
| (क) भवतो व्यवहारेण कोपो मे गलितः। | |
| (ख) राजा आश्रमे मुनेः आगच्छत्। | |
| (ग) मुनिः आश्रमे राजो निवासादिव्यवस्थामपि अकरोत्। | |
| (घ) राजा तानेव पश्चात् उपस्थापितवान्। | |

6. अधोलिखितानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि इति वाक्यसमक्षे लिखत-

- (क) राजा तं प्रश्नत्रयमपृच्छत्।
- (ख) तस्य कष्टं विलोक्य मुनिः तस्योपचारे प्रवृत्तः।
- (ग) सु निराशो भूत्वा प्रत्यावर्तनस्य विचारमकरोत्।
- (घ) सु स्वकार्यसंलग्न एव राजानं-यथेष्टमध्यनन्दत्।

7. सन्धिविच्छेदं कुरुत-

- (क) यथेष्टम् - +
- (ख) प्रत्यावर्तनम् - +
- (ग) तथान्यानि - +
- (घ) कश्चित् - +
- (ङ) सेवयैव - +
- (च) तस्योपचारे - +

परियोजनाकार्यम्

‘सेवापरमोर्धर्मः’ इति भावं वर्णयन् कामपि सत्यघटनां कथां वा लिखत-

योग्यताविस्तारः

भाषिक विस्तारः-

प्रवर्तमानायाः	-	प्र	+ वृत्	+ शानच् (स्त्री.) षष्ठी वि. एकवचनम्
उपागच्छत्	-	उप	+ आ	+ गम् लङ् लकार प्र. पु. एकवचनम्
अभ्यनन्दत्	-	अभि	+ नन्द्	+ लङ् लकार प्र. पु. एकवचनम्
प्रतीक्षितवान्	-	प्रति	+ ईक्ष्	+ वृत्वतु प्र. पु. एकवचनम्
निर्धार्य	-	निर्	+ धृ (धारणे)	ल्यप् प्रत्यय
अवोचत्	-	वच्	+ लुङ् लकार प्र. पु. एकवचनम्	
प्रत्यावर्तनस्य	-	प्रति	+ आ + वृत् + ल्युट्	प्रत्यय षष्ठी वि. एकवचनम्

अपरेद्युः	-	(अव्यय शब्द) अपर + एद्युस्
व्यापृतः	-	वि + आपृ + त
कतिपय	-	(विशेषणपदम्) कुछ, कति + अयच्, पुक् च
कतिपय शब्द के रूप अकारान्त पुँ. 'नर' शब्द के समान होंगे। इस शब्द का प्रयोग केवल बहुवचनम् में होता है।		

चकार - √कृ लिट् लकार प्रथम पु. एकवचनम्

'कृ' धातु के लिट् लकार का रूप

'परोक्षे लिट'

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चकार	चक्रतुः
मध्यमपुरुषः	चकर्थ	चक्रथुः
उत्तमपुरुषः	चकार, चकर	चकृव

लकार

छात्र पाँच लकारों का प्रयोग जानते हैं। किन्तु संस्कृत भाषा में दस लकार होते हैं। दसों लकारों के ज्ञान के लिए 'गम्' धातु का उदहारण देखें-

गम् धातु लट्टलकारः (वर्तमानकाल)

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गच्छति	गच्छतः
मध्यमपुरुषः	गच्छसि	गच्छथः
उत्तमपुरुषः	गच्छामि	गच्छावः

गम् धातु लड्डलकारः (अनद्यतनभूत)

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अगच्छत्	अगच्छताम्
मध्यमपुरुषः	अगच्छः	अगच्छतम्
उत्तमपुरुषः	अगच्छम्	अगच्छाव

गम् धातु लृट्लकारः (सामान्य भविष्य)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तमपुरुषः	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

गम् धातु लोट्लकारः (आज्ञा)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यमपुरुषः	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तमपुरुषः	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

गम् धातु विधिलिङ्गलकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यमपुरुषः	गच्छे:	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तमपुरुषः	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

गम् धातु (आशीर्लिङ्गः)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः
मध्यमपुरुषः	गम्याः	गम्यास्तम्	गम्यास्त
उत्तमपुरुषः	गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यासम

गम् धातु परोक्षेभूत (लिट्)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जगाम	जग्मस्तुः	जग्मुः
मध्यमपुरुषः	जग्मिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
उत्तमपुरुषः	जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम

गम् धातु (अनद्यतनभविष्य लुड्)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
मध्यमपुरुषः	गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ
उत्तमपुरुषः	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः

गम् धातु (सामान्यभूत-लुड्)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
मध्यमपुरुषः	अगमः	अगमतम्	अगमत
उत्तमपुरुषः	अगमम्	अगमाव	अगमाम

गम् धातु (क्रिया विपत्ति-लुड्)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्
मध्यमपुरुषः	अगमिष्यः	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत
उत्तमपुरुषः	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम

विसर्ग सन्धि में विसर्ग के पश्चात् स् या त् आने पर विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। यथा—

सर्पः + सर्पति = सर्पस्सर्पति

कः + त्वम् = कस्त्वम्

मुनिः + तु = मुनिस्तु

इस सन्धि में पद के अन्तिम स् को रु आदेश होता है तथा रु के उ का लोप हो जाता है।

मुनिः + न = मुनिर्न

मुनेः + उत्तरम् = मुनेरुत्तरम्

विसर्ग के पूर्व अ हो और बाद में भी अ हो तो विसर्ग का ओ तथा बाद के अकार का पूर्व रूप (५) हो जाता है।

यथा-

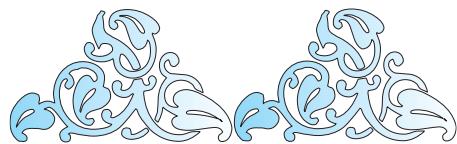
कः + अपि = कोऽपि

सः + अपि = सोऽपि

लेखक परिचयः

विश्वकथा-साहित्य में रूसी लेखक लियो टाल्स्टाय की अत्यधिक प्रसिद्धि है। सात्त्विकता से पूर्ण एवं धरती से जुड़ी हुई कहानियों के लेखक के रूप में टाल्स्टाय ने विश्व-कथा जगत् को बहुत प्रभावित किया था। इनका महान् उपन्यास ‘वार एण्ड पीस’ उन्नीसवीं शताब्दी के क्रीमिया-युद्ध के कथानक पर आधारित है जो युद्ध की निरर्थकता और शान्ति के पक्ष में वातावरण प्रस्तुत करता है। टाल्स्टाय के विचारों का महात्मा गांधी पर बहुत प्रभाव पड़ा था। दोनों में पत्राचार भी होता था। विश्व की प्रमुख भाषाओं में भी टाल्स्टाय की रचनाओं के अनुवाद हुए हैं। संस्कृत में भी उनकी रचनाएँ अनूदित हैं जो ‘टाल्स्टाय कथा संग्रहः’ के नाम से प्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत कथा प्रसिद्ध रूसी कथाकार लियो टाल्स्टाय की एक बहुप्रचलित कहानी के अंग्रेजी शीर्षक ‘Three question’ का अनूदित संक्षिप्त पुनराख्यान है। यह कहानी सेवा एवं परोपकारपरक होने के अतिरिक्त हृदय परिवर्तनकारी है। कहानी में मानव की महत्ता भी प्रतिपादित है। इस कथा का पुनराख्यान प्रो. उमाशंकर शर्मा ‘ऋषि’ के द्वारा किया गया है। प्रो. ऋषि न केवल प्रसिद्ध समीक्षक हैं अपितु विद्याध रचनाकार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। संस्कृत में आपकी एक मौलिक कथा ‘एकाकित्वम्’ साहित्य अकादमी नयी दिल्ली से प्रकाशित ‘संस्कृत लघुकथा संग्रह’ में संकलित है।



नवमः पाठः

प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्

प्रस्तुत नाट्यांश महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित ‘मुद्राराक्षसम्’ नामक नाटक के प्रथम अङ्क से उद्धृत किया गया है। नन्दवंश का विनाश करने के बाद उसके हितैषियों को खोज-खोजकर पकड़वाने के क्रम में चाणक्य, अमात्य राक्षस एवं उसके कुटुम्बियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए चन्दनदास से वार्तालाप करता है किन्तु चाणक्य को अमात्य राक्षस के विषय में कोई सुराग न देता हुआ चन्दनदास अपनी मित्रता पर दृढ़ रहता है। उसके मैत्री भाव से प्रसन्न होता हुआ भी चाणक्य जब उसे राजदण्ड का भय दिखाता है, तब चन्दनदास राजदण्ड भोगने के लिये भी सहर्ष प्रस्तुत हो जाता है। इस प्रकार अपने सुहृद् के लिए प्राणों का भी उत्सर्ग करने के लिये तत्पर चन्दनदास अपनी सुहृद्-निष्ठा का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

चाणक्यः - वत्स! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।

शिष्यः - तथेति (निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य) इतः इतः श्रेष्ठिन् (उभौ परिक्रामतः)

शिष्यः - (उपसृत्य) उपाध्याय! अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।

चन्दनदासः - जयत्वार्यः

चाणक्यः - श्रेष्ठिन्! स्वागतं ते। अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः?

चन्दनदासः - (आत्मगतम्) अत्यादरः शङ्कनीयः। (प्रकाशम्) अथ किम्। आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।

चाणक्यः - भो श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।

चन्दनदासः - आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।

- चाणक्यः - भो श्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव।
- चन्दनदासः - (सहर्षम्) आर्य! अनुगृहीतोऽस्मि।
- चाणक्यः - भो श्रेष्ठिन्! स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता प्रष्टव्याः स्मः।
- चन्दनदासः - आज्ञापयतु आर्यः।
- चाणक्यः - राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव।
- चन्दनदासः - आर्य! कः पुनरधन्यो राज्ञो विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते?
- चाणक्यः - भवानेव तावत् प्रथमम्।
- चन्दनदासः - (कर्णोऽपि पिधाय) शान्तं पापम्, शान्तं पापम्। कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः?
- चाणक्यः - अयमीदृशो विरोधः यत् त्वमद्यापि राजापथ्यकारिणोऽमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षसि।
- चन्दनदासः - आर्य! अलीकमेतत्। केनाप्यनार्येण आर्याय निवेदितम्।
- चाणक्यः - भो श्रेष्ठिन्! अलमाशङ्क्या। भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणामिच्छतामपि गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति। ततस्तत्प्रच्छादनं दोषमुत्पादयति।
- चन्दनदासः - एवं नु इदम् तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।
- चाणक्यः - पूर्वम् ‘अनृतम्’, इदानीम् “आसीत्” इति परस्परविरुद्धे वचने।
- चन्दनदासः - आर्य! तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षस्य गृहजन इति।
- चाणक्यः - अथेदानीं क्व गतः?
- चन्दनदासः - न जानामि।
- चाणक्यः - कथं न ज्ञायते नाम? भो श्रेष्ठिन्! शिरसि भयम्, अतिदूरं तत्प्रतिकारः।

चन्दनदासः - आर्य! किं मे भयं दर्शयसि? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुनरसन्तम्?



चाणक्यः - चन्दनदास! एष एव ते निश्चयः?

चन्दनदासः - बाढम्, एष एव मे निश्चयः।

चाणक्यः - (स्वगतम्) साधु! चन्दनदास साधु।
सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जने।

क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥

शब्दार्थः

मणिकार श्रेष्ठिनम्	-	रत्नकारं वणिजं	-	मणि का व्यापारी
निष्क्रम्य	-	बहिर्गत्वा	-	निकलकर
उपसृत्य	-	समीपं गत्वा	-	पास जाकर
परिक्रामतः	-	परिभ्रमणं कुर्वतः	-	(दोनों) परिभ्रमण करते हैं

प्रचीयन्ते	-	वृद्धि प्राप्नुवन्ति	-	बढ़ते हैं
संव्यवहाराणाम्	-	व्यापाराणाम्	-	व्यापारों का
आत्मगतम्	-	स्वगतम्	-	मन ही मन
शङ्कनीयः	-	सन्देहास्पदम्	-	शंका करने योग्य
अखण्डिता	-	निर्बाधा	-	बाधारहित
वणिज्या	-	वाणिज्यम्	-	व्यापार
प्रीताभ्यः	-	प्रसन्नाभ्यः	-	प्रसन्न जनों के प्रति
प्रतिप्रियम्	-	प्रत्युपकारम्	-	उपकार के बदले किया गया उपकार
अपरिक्लेशः	-	दुःखाभावः	-	दुख का अभाव
आज्ञापयतु	-	आदिशतु	-	आदेश दें
अर्थसम्बन्धः	-	धनस्य सम्बन्धः	-	धन का सम्बन्ध
परिक्लेशः	-	दुःखम्	-	दुःख
प्रष्टव्याः	-	प्रष्टुयोग्याः	-	पूछने योग्य
अवगम्यते	-	ज्ञायते	-	जाना जाता है
अविरुद्धवृत्तिः	-	अविरुद्धस्वभावः	-	विरोधरहित स्वभाव वाला
पिधाय	-	आच्छाद्य	-	बन्द कर
राजापथ्यकारिणः	-	नृपापकारकारिणः	-	राजाओं का अहित करने वाले
अलीकम्	-	असत्यम्	-	झूठ
अनार्येण	-	दुष्टेन	-	दुष्ट के द्वारा
पौराणाम्	-	नगरवासिनाम्	-	नगर के लोगों के
निक्षिप्य	-	स्थापयित्वा	-	रखकर
ब्रजन्ति	-	गच्छन्ति	-	जाते हैं
प्रच्छादनम्	-	आच्छादनम्	-	छिपाना
अमात्यः	-	मन्त्री	-	मन्त्री
असन्तम्	-	न निवसन्तम्	-	न रहने वाले
बाढम्	-	आम्	-	हाँ
संवेदने	-	समर्पणे कृते सति	-	समर्पण पर
जने	-	लोके	-	संसार में

अंतिम श्लोक का अन्वय

अन्वयः परस्य संवेदने अर्थलाभेषु सुलभेषु इदं दुष्करं कर्म जने (लोके) शिविना विना कः कुर्यात्।

परस्य परकीयस्य अर्थस्य संवेदने समर्पणे कृते सति अर्थलाभेषु सुलभेषु सत्सु स्वार्थं तृणीकृत्य परसंरक्षणरूपमेवं दुष्करं कर्म जने (लोके) एकेन शिविना विना त्वदन्यः कः कुर्यात्। शिविरपि कृते युगे कृतवान् त्वं तु इदानीं कलौ युगे करोषि इति ततोऽप्यतिशयित-सुचरितत्वमिति भावः।

अर्थ—दूसरों की वस्तु को समर्पित करने पर बहुत धन प्राप्त होने की स्थिति में भी दूसरों की वस्तु की सुरक्षा रूपी कठिन कार्य को एक शिवि को छोड़कर तुम्हारे अलावा दूसरा कौन कर सकता है?

आशय— इस श्लोक के द्वारा महाकवि विशाखदत्त ने बड़े ही संक्षिप्त शब्दों में चन्दनदास के गुणों का वर्णन किया है। इसमें कवि ने कहा है कि दूसरों की वस्तु की रक्षा करनी कठिन होती है। यहाँ चन्दनदास के द्वारा अमात्य राक्षस के परिवार की रक्षा का कठिन काम किया गया है। न्यासरक्षण को महाकवि भास ने भी दुष्कर कार्य मानते हुए स्वप्नवासवदत्तम् में कहा है— दुष्करं न्यासरक्षणम्।

चन्दनदास अगर अमात्य राक्षस के परिवारं को राजा को समर्पित कर देता, तो राजा उससे प्रसन्न भी होता और बहुत-सा धन पारितोषिक के रूप में देता, पर उसने भौतिक लाभ व लोभ को दरकिनार करते हुए अपने प्राणप्रिय मित्र के परिवारं की रक्षा को अपना कर्तव्य माना और इसे निभाया भी। कवि ने चन्दनदास के इस कार्य की तुलना राजा शिवि के कार्यों से की है जिन्होंने अपने शरणागत कपोत की रक्षा के लिए अपने शरीर के अंगों को काटकर दे दिया था। राजा शिवि ने तो सत्ययुग में ऐसा किया था, पर चन्दनदास ने ऐसा कार्य इस कलियुग में किया है, इसलिए वे और अधिक प्रशংসा के पात्र हैं।

अभ्यासः

1. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) चन्दनदासः कस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म?
(ख) तृणानां केन सह विरोधः अस्ति?

- (ग) कः चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छति?
- (घ) पाठेऽस्मिन् चन्दनदासस्य तुलना केन सह कृता?
- (ङ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियं के इच्छन्ति?
- (च) कस्य प्रसादेन चन्दनदासस्य वाणिज्या अखण्डता?
2. स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-
- (क) शिविना विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात्।
- (ख) प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृत्।
- (ग) आर्यस्य प्रसादेन में वाणिज्या अखण्डता।
- (घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः राजानः प्रतिप्रियमिच्छन्ति।
- (ङ) तृणानाम् अग्निना सह विरोधो भवति।
3. निर्देशानुसारं सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत-
- | | | | | |
|-----|------|------------------|---|--------------------|
| (क) | यथा- | कः + अपि | - | कोऽपि |
| | | प्राणेभ्यः + अपि | - | |
| | | + अस्मि | - | सज्जोऽस्मि। |
| | | आत्मनः + | - | आत्मनोऽधिकारसदृशम् |
| (ख) | यथा- | सत् + चित् | - | सच्चित् |
| | | शरत् + चन्द्रः | - | |
| | | कदाचित् + च | - | |
4. अधोलिखितवाक्येषु निर्देशानुसारं परिवर्तनं कुरुत-
- यथा— प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः। (एकवचने)
- प्रतिप्रियमिच्छति राजा।
- | | |
|-------------------------------------|--|
| (क) सः प्रकृतेः शोभां पश्यति | (बहुवचने) |
| (ख) अहं न जानामि। | (मध्यमपुरुषैकवचने) |
| (ग) त्वं कस्य गृहजनं स्वगृहेरक्षसि? | (उत्तमपुरुषैकवचने) |
| (घ) कः इदं दुष्करं कुर्यात्? | (प्रथमपुरुषबहुवचने) |
| (ङ) चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छामि। | (प्रथमपुरुषैकवचने) |
| (च) राजपुरुषाः देशान्तरं व्रजन्ति। | (प्रथमपुरुषैकवचने) |

5. कोष्ठकेषु दत्तयोः पदयोः शुद्धं विकल्पं विचित्रं रिक्तस्थानानि पूरयत्-
 - (क) विना इदं दुष्करं कः कुर्यात्। (चन्दनदासस्य / चन्दनदासेन)
 - (ख) इदं वृत्तान्तं निवेदयामि। (गुरवे / गुरोः)
 - (ग) आर्यस्य अखण्डिता मे वणिज्या। (प्रसादात् / प्रसादेन)
 - (घ) अलम् । (कलहेन / कलहात्)
 - (ङ) वीरः बालं रक्षति। (सिंहेन / सिंहात्)
 - (च) भीतः मम भ्राता सोपानात् अपतत्। (कुक्कुरेण / कुक्कुरात्)
 - (छ) छात्रः प्रश्नं पृच्छति। (आचार्यम् / आचार्येण)
6. अथोदत्तमञ्जूषातः समुचितपदानि गृहीत्वा विलोमपदानि लिखत-

आदरः असत्यम् गुणः पश्चात् तदानीम् तत्र

- | | |
|-------------|-------|
| (क) अनादरः | |
| (ख) दोषः | |
| (ग) पूर्वम् | |
| (घ) सत्यम् | |
| (ङ) इदानीम् | |
| (च) अत्र | |
7. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत्-
यथा निष्क्रम्य- शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति।

(क) उपसृत्य
(ख) प्रविश्य
(ग) द्रष्टुम्
(घ) इदानीम्
(ङ) अत्र

योग्यताविस्तारः

कविपरिचयः

‘मुद्राराक्षसम्’ इति नामः नाटकस्य प्रणेता विशाखदत्त आसीत्। सः राजवंशे उत्पन्नः आसीत्। तस्य पिता भास्करदत्तः महाराजस्य पदवीं प्राप्नोत्। विशाखदत्तः राजनीतेः न्यायस्य ज्योतिषविषयस्य च विद्वान् आसीत्। वैदिकधर्मावलम्बी भूत्वाऽपि सः बौद्धधर्मस्य अपि आदरमकरोत्।

ग्रन्थपरिचयः

‘मुद्राराक्षसम्’ एकम् ऐतिहासिकं नाटकम् अस्ति। दशाङ्केषु विरचिते अस्मिन्नाटके चाणक्यस्य राजनीतिककौशलस्य बुद्धिवैभवस्य राष्ट्रसञ्चालनार्थम् कूटनीतीनाम् निर्दर्शनमस्ति। अस्मिन्नाटके चाणक्यस्यामात्यराक्षसस्य च कूटनीत्योः संघर्षः।

भावविस्तारः

चाणक्य- चाणक्यः एकः विद्वान् ब्राह्मणः आसीत्। तस्य पितृप्रदत्तं नाम विष्णुगुप्तः आसीत्। अयमेव ‘कौटिल्य’ इति नामा प्रसिद्धः। केषाञ्चित् विदुषाम् इदमपि मतमस्ति यत् राजनीतिशास्त्रे कुटिलनीतेः प्रतिष्ठापनाय तस्याः स्व-जीवने उपयोगाय च अयं ‘कौटिल्यः’ इत्यपि कथ्यते।

चाणकनामकस्य कस्यचित् आचार्यस्य पुत्रत्वात् ‘चाणक्यः’ इति नामा स प्रसिद्धः जातः। नन्दानां राज्यकालः शतवर्षाणि पर्यन्तम् आसीत्। तेषु अन्तिमेषु द्वादशवर्षेषु एतेन सुमाल्यादीनाम् अष्टनन्दानां संहारः कारितः तथा च चन्द्रगुप्तमौर्यः नृपत्वेन राजसिंहासने स्थापितः। अयमेकः महान् राजनीतिज्ञः आसीत्। एतेन भारतीयशासनव्यवस्थायाः प्रामाणिकतत्त्वानां वर्णनेन युक्तं “अर्थशास्त्रम्” इति अतिमहत्त्वपूर्णः ग्रन्थः रचितः।

चन्द्रगुप्तमौर्यः- चन्द्रगुप्तः महापदमनन्दस्य मुरायाः च पुत्रः आसीत्। चाणक्यस्य मार्गदर्शने अनेन चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तं राज्यं कृतम्।

राक्षसः- नन्दराज्ञः स्वामिभक्तः चतुरः प्रधानामात्यः आसीत्।

चन्दनदासः- कुसुमपुर नामि नगरे महामात्यस्य राक्षसस्य प्रियतमं पात्रं मित्रज्ञ आसीत्। स मणिकारः श्रेष्ठी च आसीत्। अस्यैव गृहात् राक्षसः सपरिवार नगरात् बहिरगच्छत्।

भाषिक विस्तारः

- पृथक् और विना शब्दों के योग में द्वितीया तृतीया और पंचमी तीनों विभक्तियों का प्रयोग-
यथा-जलं विना जीवनं न सम्भवति।

द्वितीया

जलेन विना जीवनं न सम्भवति।	तृतीया
जलात् विना जीवनं न सम्भवति।	पंचमी
परिश्रमं पृथक् नास्ति सुखम्।	द्वितीया
परिश्रमेण पृथक् नास्ति सुखम्।	तृतीया
परिश्रमात् पृथक् नास्ति सुखम्।	पंचमी

2. अनीयर् प्रत्ययप्रयोगः

अत्यादरः	शङ्कनीयः
जन्तुशाला	दर्शनीया
याचकेभ्यः दानं	दानीयम्
वेदमन्त्राः	स्मरणीयाः
पुस्तकमेलापके पुस्तकानि क्रयणीयानि।	
(क) अनीयर् प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थे भवति।	
(ख) अनीयर् प्रत्यये 'अनीय' इति अवशिष्यते।	
(ग) अस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु चलन्ति।	

यथा -	पुँलिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुंसकलिङ्गे
	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्

इनके रूप क्रमशः देववत्, लतावत् तथा फलवत् चलेंगे।

3. उभ सर्वनामपदम्

पुँलिङ्गे	नपुंसकलिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे
उभौ	उभे	उभे
उभौ	उभे	उभे
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभयोः	उभयोः	उभयोः
उभयोः	उभयोः	उभयोः

दशमः पाठः

अन्योक्तयः

अन्योक्ति अर्थात् किसी की प्रशंसा अथवा निन्दा अप्रत्यक्ष रूप से अथवा किसी बहाने से करना। जब किसी प्रतीक या माध्यम से किसी के गुण की प्रशंसा या दोष की निन्दा की जाती है, तब वह पाठकों के लिए अधिक ग्राह्य होती है। प्रस्तुत पाठ में ऐसी ही सात अन्योक्तियों का सङ्कलन है जिनमें राजहंस, कोकिल, मेघ, मालाकार, सरोवर तथा चातक के माध्यम से मानव को सद्वृत्तियों एवं सत्कर्मों के प्रति प्रवृत्त होने का संदेश दिया गया है।

एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत् ।
न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना ॥1॥

भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता
न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानि ।
रे राजहंस! वद तस्य सरोवरस्य,
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः ॥2॥

तोयैरल्पैरपि करुणया भीमभानौ निदाधे,
मालाकार! व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टिः ।
सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वारां,
धारासारानपि विकिरता विश्वतो वारिदेन ॥3॥

आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतङ्गः:,
भृङ्गा रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते ।
सङ्कोचमञ्चति सरस्त्वयि दीनदीनो,
मीनो नु हन्त कतमां गतिमध्युपैतु ॥4॥

एक एवं खगो मानी वने वसति चातकः ।
पिपासितो वा प्रियते याचते वा पुरन्दरम् ॥५॥

आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णातप्त-
मुहामदावविधुराणि च काननानि ।
नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा,
रिक्तोऽसि यज्जलद! सैव तवोत्तमा श्रीः ॥६॥

रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयता-
मम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः ।
केचिद् वृष्टिभिराद्र्दयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा,
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ॥७॥

शब्दार्थः

सरसः	-	तडागस्य	-	तालाब का
बक्सहस्त्रेण	-	बकानां सहस्रेण	-	हजारों बगुलों से
परितः	-	सर्वतः	-	चारों ओर
तीरवासिना	-	तटनिवासिना	-	तटवासी के द्वारा
मृणालपटली	-	कमलनालसमूहः	-	कमलनाल का समूह
निपीतानि	-	निः शेषेण पीतानि	-	भलीभाँति पीया गया
अम्बूनि	-	जलानि	-	जल
नलिनानि	-	कमलानि	-	कमलों को
निषेवितानि	-	सेवितानि	-	सेवन किये गये
भविता	-	भविष्यति	-	होगा
कृत्येन	-	कार्येण	-	कार्य से
कृतोपकारः	-	कृतः उपकारः येन सः	-	उपकार किया हुआ(प्रत्युपकार करने वाला)

तोयैः	- जलैः	- जल से
भीमभानौ	- भीमःभानुः यस्मिन् सः भीमभानुः तस्मिन्	- ग्रीष्मकाल में (सूर्य के अत्यधिक तपने पर)
निदाघे	- ग्रीष्मकाले	- ग्रीष्मकाल में
मालाकार	- हे मालाकार!	- हे माली!
पुष्टिः	- पुष्टा, वृद्धिः	- पोषण
जनयितुम्	- उत्पादयितुम्	- उत्पन्न करने के लिए
प्रावृष्टेण	- वर्षाकालिकेन	- वर्षाकालिक
वारिदेन	- जलदेन	- बादल के द्वारा
धारासारान्	- धाराणां आसारान्	- धाराओं का प्रवाह
वाराम्	- जलानाम्	- जलों के
विकिरता	- (जलं)वर्षयता	- (जल) बरसाते हुए
आपेदिरे	- प्राप्तवन्तः	- प्राप्त कर लिए
अम्बरपथम्	- आकाशमार्गम्	- आकाश-मार्ग को
पतङ्गः	- खगाः	- पक्षी
भृङ्गः	- भ्रमराः	- भौंरे, भँवरे
रसालमुकुलानि	- रसालानां मुकुलानि	- आम की मञ्जरियों को
सङ्कोचम् अञ्चति	- सङ्कोचं गच्छति	- संकुचित होने पर
मीनः	- मत्स्यः	- मछली
पुरन्दरम्	- इन्द्रम्	- इन्द्र को
मानी	- स्वाभिमानी	- स्वाभिमानी
अभ्युपैतु	- प्राप्नोतु	- प्राप्त करें
आश्वास्य	- समाश्वास्य	- संतुष्ट करके
पर्वतकुलम्	- पर्वतानां कुलम्	- पर्वतों के समूह को
तपनोष्णातप्तम्	- तपनस्य उष्णेन तप्तम्	- सूर्य की गर्मी से तपे हुए को
उद्धामदावविधुराणि	- उन्नतकाष्ठरहितानि	- ऊँचे काष्ठों (वृक्षों) से रहित को

नानानदीनदशतानि	- नाना नद्यः, नदानां शतानि च	- अनेक नदियों और सैकड़ों नदों को
काननानि	- वनानि	- वन
पूरयित्वा	- पूर्ण कृत्वा	- पूर्ण करके (भरकर)
पिपासितः	- तृष्णितः	- प्यासा
सावधानमनसा	- ध्यानेन	- ध्यान से
अम्बोदाः	- मेघाः	- बादल
गगने	- आकाशे	- आकाश में
आर्द्रयन्ति	- जलेन क्लेदयन्ति	- जल से भिगो देते हैं
वसुधाम्	- पृथ्वीम्	- पृथ्वी को
गर्जन्ति	- गर्जनं (ध्वनिम्) कुर्वन्ति	- गर्जना करते हैं
पुरतः	- अग्रे	- आगे, सामने

सर्वासाम् अन्योक्तीनाम् अन्वयाः-

1. एकेन राजहंसेन सरसः या शोभा भवेत्। परितः तीरवासिना बकसहस्रेण सा (शोभा) न (भवति)॥
2. यत्र भवता मृणालपटली भुक्ता, अम्बूनि निपीतानि नलिनानि निषेवितानि। रे राजहंस! तस्य सरोवरस्य केन कृत्येन कृतोपकारः भविता असि, वद॥
3. हे मालाकार! भीमभानौ निदाघे अल्पैः तोयैः अपि भवता करुणया अस्य तरोः या पुष्टिः व्यरचि। वाराम् प्रावृषेण्येन विश्वतः धारासारान् अपि विकिरता वारिदेन इह जनयितुम् सा (पुष्टिः) किम् शक्या॥।
4. पतञ्जःः परितः अम्बरपथम् आपेदिरे, भृङ्गःः रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते। सरः त्वयि सङ्कोचम् अञ्चति, हन्त दीनदीनः मीनः नु कतमां गतिम् अभ्युपैतु॥।
5. एक एव मानी खगः चातकः वने वसति। वा पिपासितः म्रियते पुरन्दरम् याचते वा॥
6. तपनोष्णतप्तम् पर्वतकुलम् आश्वास्य उद्दामदावविधुराणि काननानि च (आश्वास्य) नानानदीनदशतानि पूरयित्वा च हे जलद! यत् रिक्तः असि तव सा एव उत्तमा श्रीः॥।

7. रे रे मित्र चातक! सावधानमनसा क्षणं श्रूयताम्, गगने हि बहवः अम्भोदाः सन्ति, सर्वे अपि एतादृशाः न (सन्ति) केचित् धरिणीं वृष्टिभिः आर्द्रयन्ति, केचिद् वृथा गर्जन्ति, (त्वम्) यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतः दीनं वचः मा ब्रूहि॥

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) सरसः शोभा केन भवति?
- (ख) चातकः कं याचते?
- (ग) मीनः कदा दीनां गतिं प्राप्नोति?
- (घ) कानि पूरयित्वा जलदः रिक्तः भवति?
- (ङ) वृष्टिभिः वसुधां के आर्द्रयन्ति?

2. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) मालाकारः तोयैः तरोः पुष्टिं करोति।
- (ख) भृङ्गः रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते।
- (ग) पतङ्गः अम्बरपथम् आपेदिरे।
- (घ) जलदः नानानदीनदशतानि पूरयित्वा रिक्तोऽस्ति।
- (ङ) चातकः वने वसति।
- (च) अम्भोदाः वृष्टिभिः वसुधां आर्द्रयन्ति।

3. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत-

- (i) यथा - अन्य+ उक्तयः = अन्योक्तयः:

- (क) + = निपीतान्यम्बूनि
- (ख) + उपकारः = कृतोपकारः
- (ग) तपन + = तपनोष्णातप्तम्
- (घ) तव + उत्तमा =
- (ङ) न + एतादृशाः =

(ii) यथा - पिपासितः + अपि = पिपासितोऽपि

- (क) + = कोऽपि
- (ख) + = रिक्तोऽसि
- (ग) मीनः + अयम् =
- (घ) + आर्द्रयन्ति = वृष्टिभिरार्द्रयन्ति

(iii) यथा - सरसः + भवेत् = सरसोभवेत्

- (क) खगः + मानी =
- (ख) + नु = मीनो नु

(iv) यथा - मुनिः + अपि = मुनिरपि

- (क) तोयैः + अल्पैः =
- (ख) + अपि = अल्पैरपि
- (ग) तरोः + अपि =

4. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितैः विग्रहपदैः समस्तपदानि रचयत-

विग्रहपदानि

समस्त पदानि

यथा - पीतं च तत् पङ्कजम् = पीतपङ्कजम्

- (क) राजा च असौ हंसः =
- (ख) भीमः च असौ भानुः =
- (ग) अम्बरम् एव पन्थाः =
- (घ) उत्तमा च इयम् श्रीः =
- (ङ) सावधानं च तत् मनः, तेन =

5. उदाहरणमनुसृत्य निम्नलिखिताभिः धातुभिः सह यथानिर्दिष्टान् प्रत्ययान् संयुज्य शब्दरचनां कुरुत-

धातुः क्त्वा क्तवतु तव्यत् अनीयर्

- | | | | | |
|---------|---------|----------|----------|--------|
| (क) पठ् | पठित्वा | पठितवान् | पठितव्यः | पठनीयः |
| (ख) गम् | | | | |

(ग) लिख्
(घ) कृ
(ङ) ग्रह्
(च) नी

6. पाठमनुसृत्य अधोलिखितानां मूलशब्दानां यथानिर्दिष्टेषु विभक्तिवचनेषु रूपाणि लिखत-

मूलशब्दाः विभक्तिवचने शब्दरूपाणि

यथा - राजहंस तृतीयैकवचने राजंहसेन

(क) एक (पुँलिङ्गः)	तृतीयैकवचने
(ख) तरु	षष्ठ्यैकवचने
(ग) वन	सप्तम्यैकवचने
(घ) पुरन्दर	द्वितीयैकवचने
(ङ) करुणा	तृतीयैकवचने
(च) जलद्	सम्बोधनैकवचने
(छ) सरस् (सरः)	षष्ठ्यैकवचने

7. अधोलिखितयोः श्लोकयोः भावार्थं हिन्दीभाषया आंग्लभाषया वा लिखत-

(क) आपेदिरे कतमां गतिमभ्युपैति।

(ख) आश्वास्य सैव तवोत्तमा श्रीः॥

योग्यताविस्तारः

पाठपरिचयः

अन्येषां कृते या उक्तयः कथ्यन्ते ता उक्तयः (अन्योक्तयः) अत्र पाठे सङ्कलिता वर्तन्ते। अस्मिन् पाठे षष्ठश्लोकम् सप्तमश्लोकम् च अतिरिच्य ये श्लोकाः सन्ति ते पण्डितराजजगन्नाथस्य ‘भामिनीविलास’ इति गीतिकाव्यात् सङ्कलिताः सन्ति। षष्ठः श्लोकः महाकवि माघस्य ‘शिशुपालवधम्’ इति महाकाव्यात् गृहीतः अस्ति। सप्तमः श्लोकः महाकविभर्तृहरे: नीतिशतकात् उद्धृतः अस्ति।

कविपरिचयः

पण्डितराजजगन्नाथः संस्कृतसाहित्यस्य मूर्धन्यः सरसश्च कविः आसीत्। सः शाहजहाँ नामकेन मुगल शासकेन स्वराजसभायां सम्मानितः। पण्डितराजजगन्नाथस्य त्रयोदश कृतयः प्राप्यन्ते। (1) गङ्गालहरी (2) अमृतलहरी (3) सुधालहरी (4) लक्ष्मीलहरी (5) करुणालहरी (6) आसफविलासः (7) प्राणाभरणम् (8) जगदाभरणम् (9) यमुनावर्णनम् (10) रसगङ्गाधरः (11) भामिनीविलासः (12) मनोरमाकुचमर्दनम् (13) चित्रमीमांसाखण्डनम्। एतेषु ग्रन्थेषु ‘भामिनीविलासः’ इति तस्य विविधपद्मानां सङ्ग्रहः।

महाकविमाघः:- महाकविमाघस्य एकमेव महाकाव्यं प्राप्यते “शिशुपालवधम्” इति।

भर्तृहरिः:- महाकविभर्तृहरिः त्रीणि शतकानि सन्ति, नीतिशतकम्, शृङ्गारशतकम् वैराग्यशतकं च।

अधोदत्ताः विविधविषयकाः श्लोकाः अपि पठनीयाः स्मरणीयाश्च-

हंसः - हंसः श्वेतः बकः श्वेतः को भेदो बकहंसयोः।
नीरक्षीरविभागे तु हंसो हंसः बको बकः ॥

एकमेव पर्याप्तम् - एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्।
सहैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति रासभी ॥

पिकः - काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥

चातक वर्णनम् - यद्यपि सन्ति बहूनि सरांसि,
स्वादुशीतल सुरभि पयांसि ।
चातकपोतस्तदपि च तानि,
त्यक्त्वा याचति जलदजलानि ॥



एकादशः पाठः

विचित्रः साक्षी

प्रस्तुत पाठ श्री ओमप्रकाश ठाकुर द्वारा रचित कथा का सम्पादित अंश है। यह कथा बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा न्यायाधीश-रूप में दिये गये फैसले पर आधारित है। सत्यासत्य के निर्णय हेतु न्यायाधीश कभी-कभी ऐसी युक्तियों का प्रयोग करते हैं जिससे साक्ष्य के अभाव में भी न्याय हो सके। इस कथा में भी विद्वान् न्यायाधीश ने ऐसी ही युक्ति का प्रयोग कर न्याय करने में सफलता पाई है।
कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् विज्ञमुपार्जितवान्। तेन स्वपुत्रं एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा स पिता तनूजस्य रुणतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः। परमर्थकाश्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

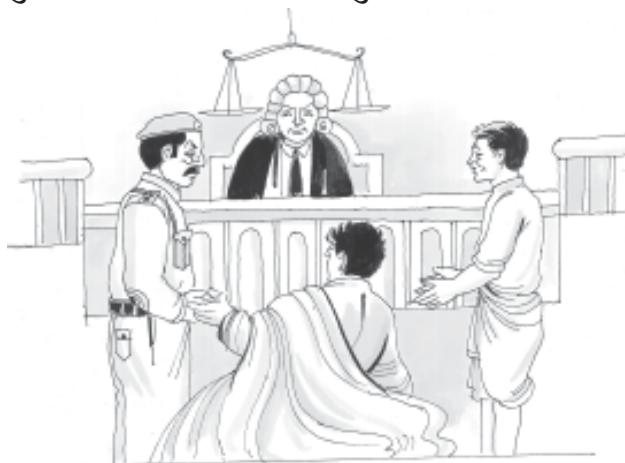
पदातिक्रमेण संचलन् सायं समयेऽप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आसीत्। निशान्धकारे प्रसृते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा। एवं विचार्य स पाश्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः। करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।

विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथिः चौरशङ्क्या तमन्वधावत् अगृहणाच्च, परं विचित्रमधट्टत। चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत “चौरोऽयं चौरोऽयम्” इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौर आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

अग्रिमे दिने स आरक्षी चौर्याभियोगे तं न्यायालयं नीतवान्। न्यायाधीशो बंकिमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक्-पृथक् विवरणं श्रुतवान्। सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षिणं च दोषभाजनम् किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतुं नाशक्नोत्। ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्। अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं पुनः स्थापितवन्तौ। तदैव कश्चिद् तत्रत्यः कर्मचारी समागत्य न्यवेदयत् यत् इतः क्रोशद्व्यान्तराले कश्चिज्जनः केनापि हतः। तस्य मृतशरीरं राजमार्गं निकषा वर्तते। आदिश्यतां किं करणीयमिति। न्यायाधीशः आरक्षिणम् अभियुक्तं च तं शबं न्यायालये आनेतुमादिष्टवान्।

आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत्, अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत्। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच-रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः। इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुड़क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्यसे” इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथज्जिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।

न्यायाधीशेन पुनस्तौ घटनायाः विषये वक्तुमादिष्टौ। आरक्षिणि निजपक्षं प्रस्तुतवति



आश्चर्यमधटत् स शवः प्रावारकमपसार्य न्यायाधीशमभिवाद्य निवेदितवान्- मान्यवर! एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तद् वर्णयामि ‘त्वयाऽहं चोरितायाः मञ्जूषायाः

ग्रहणाद् वारितः, अतः निजकृत्यस्य फलं भुडःक्ष्वा। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्यसे' इति।

न्यायाधीशः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्।

अतएवोच्यते - दुष्करण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः।

नीतिं युक्तिं समालम्ब्य लीलयैव प्रकुर्वते॥

शब्दार्थः

भूरि	- पर्याप्तम्	- अत्यधिक
उपार्जितवान्	- अर्जितवान्	- कमाया
निवसन्	- वासं कुर्वन्	- रहते हुए
प्रसृते	- विस्तृते	- फैलने पर
विजने प्रदेशे	- एकान्तप्रदेशे	- एकान्त प्रदेश में
शुभावहा	- कल्याणप्रदा	- कल्याणकारी
गृही	- गृहस्वामी	- गृहस्थ
दैवगतिः	- भाग्यस्थितिः	- भाग्य की लीला
पलायितः	- वेगेन निर्गतः/पलायनमकरोत्	- भाग गया, चला गया
प्रबुद्धः	- जागृतः	- जागा हुआ
त्वरितम्	- शीघ्रम्	- शीघ्रगामी
प्रस्थितः	- गतः	- चला गया
अर्थकाश्येन	- धनस्य अभावेन	- धनाभाव के कारण
पदातिरेव	- पादाभ्याम् एव	- पैदल ही
पुंसः	- पुरुषस्य	- मनुष्य का
निहिताम्	- स्थापिताम्	- रखी हुई
अन्वधावत्	- अन्वगच्छत्	- पीछे-पीछे गया
क्रोशितुम्	- चीत्कर्तुम्	- जोर जोर से कहने/चिल्लाने

तारस्वरेण	- उच्चस्वरेण	- ऊँची आवाज में
अभृत्संयन्	- भर्त्सनाम् अकुर्वन्	- भला-बुरा कहा
प्रख्याप्य	- स्थाप्य	- स्थापित करके
चौर्याभियोगे	- चौरकर्मणि चौर्यदोषारोपे	- चोरी के आरोप में
नीतवान्	- अनयत्	- ले गया
अवगत्य	- ज्ञात्वा	- जानकर
दोषभाजनम्	- दोषपात्रम्	- दोषी
उपस्थातुम्	- उपस्थापयितुम्	- उपस्थित होने के लिए
आरक्षिणम्	- सैनिकम् (रक्षक पुरुष)	- सैनिक
आदिष्टवान्	- आज्ञां दत्तवान्	- आज्ञा दी
स्थापितवन्तौ	- स्थापनां कृतवन्तौ	- स्थापना करके
तत्रत्यः	- तत्र भवः	- वहाँ का
न्यवेदयत्	- प्रार्थयत्	- प्रार्थना की
क्रोशद्वयान्तराले	- द्वयोः क्रोशयोः मध्ये	- दो कोस के मध्य
आदिश्यताम्	- आदेशं दीयताम्	- आज्ञा दीजिए
उपेत्य	- समीपं गत्वा	- पास जाकर
काष्ठपटले	- काष्ठस्य पटले	- लकड़ी के तख्ते पर
निहितम्	- स्थापितम्	- रखा गया
पटाच्छादितम्	- वस्त्रेणावृतम्	- कपड़े से ढका हुआ
वहन्तौ	- धारयन्तौ	- धारण करते हुए, बहन करते हुए
कृशकायः	- दुर्बलं शरीरम्	- कमजोर शरीरवाला
भारवतः	- भारवाहिनः	- भारवाही
भारवेदनया	- भारपीडया	- भार की पीड़ा से
क्रन्दनम्	- रोदनम्	- रोने को

निशम्य	-	श्रुत्वा	-	सुन करके
मुदितः	-	प्रसन्नः	-	प्रसन्न
भुड़क्षव	-	अनुभवतु	-	अनुभव करो
चत्वरे	-	चतुर्मार्गं/चतुर्स्थे	-	चौराहे पर
लप्यसे	-	प्राप्यसे	-	प्राप्त करोगे
प्रावारकम्	-	उत्तरीयवस्त्रम्	-	लबादा
अपसार्य	-	अपवार्य	-	दूर करके
अभिवाद्य	-	अभिवादनं कृत्वा	-	अभिवादन करके
अध्वनि	-	मार्गे	-	रास्ते में
यदुक्तम्	-	यत् कथितम्	-	जो कहा गया
वारितः	-	निवारितः	-	रोका गया
मुक्तवान्	-	अत्यजत्	-	छोड़ दिया
समालम्ब्य	-	आश्रयं गृहीत्वा	-	सहारा लेकर
लीलयैव	-	कौतुकेन (सुगमतया)	-	खेल-खेल में
आदिश्य	-	आदेशं दत्वा	-	आदेश देकर

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) निर्धनः जनः कथं वित्तम् उपार्जितवान्?
- (ख) जनः किमर्थं पदातिः गच्छति?
- (ग) प्रसृते निशान्धकारे स किम् अचिन्तयत?
- (घ) वस्तुतः चौरः कः आसीत्?
- (ङ) जनस्य क्रन्दनं निशम्य आरक्षी किमुक्तवान्?
- (च) मतिवैभवशालिनः दुष्कराणि कार्याणि कथं साधयन्ति?

2. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) पुत्रं द्रुष्टुं सः प्रस्थितः।
- (ख) करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।
- (ग) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।
- (घ) न्यायाधीशः बंकिमचन्द्रः आसीत्।
- (ङ) स भारवेदनया क्रन्दति स्म।
- (च) उभौ शबं चत्वरे स्थापितवन्तौ।

3. सन्धि/सन्धिविच्छेदं च कुरुत-

- (क) पदातिरेव - +
- (ख) निशान्धकारे - +
- (ग) अभिः + आगतम् -
- (घ) भोजन + अन्ते -
- (ङ) चौरोऽयम् - +
- (च) गृह + अभ्यन्तरे -
- (छ) लीलयैव - +
- (ज) यदुक्तम् - +
- (झ) प्रबुद्धः + अतिथिः -

4. अथोलिखितानि पदानि भिन्न-भिन्नप्रत्ययान्तानि सन्ति। तानि पृथक् कृत्वा निर्दिष्टानां प्रत्ययानामधः लिखत-

परिश्रम्य, उपार्जितवान्, दापयितुम्, प्रस्थितः, द्रष्टुम्, विहाय, पृष्टवान्, प्रविष्टः, आदाय, क्रोशितुम्, नियुक्तः, नीतवान्, निर्णेतुम्, आदिष्टवान्, समागत्य, निशम्य, प्रोच्य, अपसार्य।

ल्यप्	कृत	कृतवतु	तुमुन्
.....
.....
.....

5. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत-

- (क) विचित्रा, शुभावहा, शङ्खया, मञ्जूषा
- (ख) कशचन, किञ्चित्, त्वरितं, यदुक्तम्
- (ग) पुत्रः, तनयः, व्याकुल, तनूजः
- (घ) करुणापरः, अतिथिपरायणः, प्रबुद्धः, जनः

6. (क) ‘निकषा’ ‘प्रति’ इत्यनयोः शब्दयोः योगे द्वितीया-विभक्तिः भवति। उदाहरणमनुसृत्य द्वितीया-विभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-

यथा- राजमार्ग निकषा मृतशरीरं वर्तते।

- (क) निकषा नदी वहति (ग्राम)।
- (ख) निकषा औषधालयं वर्तते। (नगर)
- (ग) तौ प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधिकारिन्)
- (घ) मोहनः प्रति गच्छति। (गृह)

(ख) कोष्ठकेषु दत्तेषु पदेषु यथानिर्दिष्टां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) सः निष्क्रम्य बहिरगच्छत्। (गृह शब्दे पंचमी)
- (ख) चौरशंकया अतिथिः अन्वधावत्। (चौरशब्दे द्वितीया)
- (ग) गृहस्थः आश्रयं प्रायच्छत्। (अतिथि शब्दे चतुर्थी)
- (घ) तौ प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधीश शब्दे द्वितीया)

7. अधोलिखितानि वाक्यानि बहुवचने परिवर्तयत-

- (क) स बसयानं विहाय पदातिरेव गन्तुं निश्चयं कृतवान्।
- (ख) चौरः ग्रामे नियुक्तः राजपुरुषः आसीत्।
- (ग) कशचन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः।
- (घ) अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं स्थापितवन्तौ।

योग्यताविस्तारः

(क) विचित्रः साक्षी

न्यायो भवति प्रमाणाधीनः। प्रमाणं विना न्यायं कर्तुं न कोऽपि क्षमः सर्वत्र। न्यायालयेऽपि न्यायाधीशः यस्मिन् कस्मिन्प्रपि विषये प्रमाणाभावे न समर्थः भवन्ति। अतएव, अस्मिन् पाठे चौर्याभियोगे न्यायाधीशः प्रथमतः साक्ष्यं (प्रमाणम्) विना निर्णेतुं नाशक्नोत्। अपरेद्युः यदा स शब्दः न्यायाधीशं सर्वं निवेदितवान् सप्रमाणं तदा सः आरक्षणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्। अस्य पाठस्य अयमेव सन्देशः।

(ख) मतिवैभवशालिनः

बुद्धिसम्पत्ति सम्पन्नाः। ये विद्वांसः बुद्धिस्वरूपविभवयुक्ताः ते मतिवैभवशालिनः भवन्ति। ते एव बुद्धिचातुर्यबलेन असम्भवकार्याणि अपि सरलतया कुर्वन्ति।

(ग) स शब्दः

न्यायाधीश बंकिमचन्द्रमहोदयैः अत्र प्रमाणस्य अभावे किमपि प्रच्छन्नः जनः साक्ष्यं प्राप्नुं नियुक्तः जातः। यद् घटितमासीत् सः सर्वं सत्यं ज्ञात्वा साक्ष्यं प्रस्तुतवान्। पाठेऽस्मिन् शब्दः एव ‘विचित्रः साक्षी’ स्यात्।

भाषिकविस्तारः

उपार्जितवान् - उप + √ अर्ज् + ल्युट्, युच् वा

दापयितुम् - √दा + णिच् + तुमुन्

अदस् (यह) पुँलिङ्गः सर्वनाम शब्द

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
----------	---------	-----------	----------

प्रथमा	असौ	अमू	अमी
--------	-----	-----	-----

द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
----------	-------	-----	-------

तृतीया	अमुना	अमूर्भ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूर्भ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	अमूर्भ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

अध्वन् (मार्ग) नकारान्त पुँलिङ्गः

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अध्वा	अध्वानौ	अध्वानः
द्वितीया	अध्वानम्	अध्वानौ	अध्वनः
तृतीया	अध्वना	अध्वभ्याम्	अध्वभिः
चतुर्थी	अध्वने	अध्वभ्याम्	अध्वभ्यः
पंचमी	अध्वनः	अध्वभ्याम्	अध्वभ्यः
षष्ठी	अध्वनः	अध्वनोः	अध्वनाम्
सप्तमी	अध्वनि	अध्वनोः	अध्वसु
सम्बोधन	हे अध्वन्!	हे अध्वानौ!	हे अध्वनः!



द्वादशः पाठः

जीवनं विभवं विना

प्रस्तुत पाठ जनजीवन से सम्बद्ध कुछ रोचक एवं मार्मिक पद्यों का संकलन है। इनमें जनसामान्य विशेषतः दरिद्र लोगों की पीड़ा से द्रवीभूत कवियों के उद्गार हैं। इन श्लोकों में दरिद्रता का अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है।

सक्तून् शोचति सम्प्लुतान् प्रतिकरोत्याक्रन्दतो बालकान्
प्रत्युत्सञ्चति कपरिण सलिलं शव्यातृणं रक्षति।
दत्वा मूर्धनि शीर्णशूर्पशकलं जीर्णे गृहे व्याकुला
किं तद् यन्न करोति दुःखगृहिणी देवे भूषं वर्षति ॥1॥



अद्याशनं शिशुजनस्य बलेन जातं
श्वो वा कथं नु भवितेति विचिन्तयन्ती।
इत्यश्रुपातमलिनीकृतगण्डदेशा
नैच्छद् दरिद्रगृहिणी रजनीविरामम् ॥2॥

प्रायो दरिद्रशिशवः परमन्दिराणां
 द्वारेषु दत्तकरपल्लवलीनदेहाः।
 लज्जानिगूढवचसो बत भोक्तुकामा
 भोक्तारमर्धनयनेन विलोकयन्ति ॥३॥



कन्थाखण्डमिदं प्रयच्छ यदि वा स्वाङ्के गृहाणार्भकं,
 रिक्तं भूतलमत्र नाथ भवतः पृष्ठे पलालोच्चयः।
 दम्पत्योर्निशिजल्पतोरितिवचः श्रुत्वैव चौरस्तदा
 लब्धं कर्पटमन्यतस्तदुपरि क्षिप्त्वा रुदन्निर्गतः ॥४॥

हसति हसति स्वामिन्युच्चै रुदत्यपि रोदिति
 कृतपरिकरः स्वेदोदगारं प्रधावति धावति।
 गुणसमुदितं दोषोपेतं प्रनिन्दति निन्दति
 धनलवपरिक्रीतो भृत्यः प्रनृत्यति नृत्यति ॥५॥

रात्रौ जानुर्दिवा भानुः कृशानुः सन्ध्ययोद्द्वयोः
 इत्थं शीतं मया नीतं जानुभानुकृशानुभिः ॥६॥

शब्दार्थः

सक्तून्	- भूर्जितस्य चणकस्य चूर्णम्	- सत्तू को
शोचति	- चिन्तयति	- चिंता करती है
सम्प्लुतान्	- आद्रान्	- भीगे हुए को
आक्रन्दतो	- क्रन्दनं कुर्वत्	- रोते हुए को
प्रतिकरोति	- शास्यति	- चुप कराती है
कर्परेण	- भग्न पालेण	- टूटे बर्तन के टुकड़े से
प्रत्युत्सिञ्चति	- शोषयति	- सुखाती है/उलीच रही है
सलिलम्	- जलम्	- जल को
शस्यातृणम्	- तृणः निर्मितां शस्याम्	- पुआल का बना बिस्तर
मूर्धनि	- शिरसि	- सिर पर
शीर्णशूर्पशक्लम्	- जीर्णशूर्पश्वण्डम्	- टूटे-फूटे सूप के टुकड़े को
जीर्णे	- प्राचीने	- पुराने
भृशं	- अत्यन्तम्	- अत्यधिक
अशनम्	- भोजनम्	- भोजन
मलिनीकृतगण्डदेशा	- मलिनकपोलप्रदेशाः	- जिसके गाल मलिन हो गए हैं।
रजनीविरामम्	- रात्राः अन्ते	- रात्रि की समाप्ति
परमन्दिराणाम्	- परभवनानाम्	- दूसरों के घरों का
दत्तकरपल्लनलीनदेहाः	- निहितकरकिसलयगोपितकायाः	- हथेली से मुख छिपाए हुए
लज्जानिगूढवचसः	- लज्जावृतशब्दाः	- लज्जावश जिसके वचन नहीं निकल रहे
अर्धनयनेन	- अर्धनिमीलितनेत्रेण	- अधमुँदी आँखों से
भोक्तारम्	- भोजनं कुर्वाणं	- भोजन करने वालों को
विलोक्यन्ति	- पश्यन्ति	- देखते हैं

कन्था	-	जीर्णवस्त्रेण निर्मितं आस्तरणम्	-	कथरी
प्रयच्छ	-	देहि	-	दो
स्वाङ्के	-	स्वक्रोडे	-	अपनी गोद में
अर्भकम्	-	बालम्	-	बच्चे को
भूतलम्	-	भूमितलम्	-	धरती
पलालोच्ययः	-	पलालसंग्रहः	-	पुआल का ढेर
दम्पत्योः	-	पति-पत्न्योः	-	पति-पत्नी की
निशि	-	रात्रौ	-	रात में
जल्पतोः	-	गल्पतोः	-	बात करते हुए (दो को)
कर्पटम्	-	जीर्णवस्त्रम्	-	चादर, जीर्णशीर्ण कपड़ा
निर्गतः	-	बहिर्गतः	-	निकल गया
परिकरः	-	कटिभागम्	-	कमर
स्वेदोदगारम्	-	स्वेदस्य श्रमविन्दोः उद्गारम्	-	पसीने का निकलना
दोषोपेतम्	-	दोषसहितम्/निर्गमनम्	-	दोषमुक्त
धनलवपरिक्रीतः	-	अल्पधनेनक्रीतः	-	थोड़े धन से खरीदा हुआ
भृत्यः	-	परिचारकः	-	नौकर
जानुः	-	शरीरावयवविशेषः	-	घुटना
भानुः	-	रविः	-	सूर्य
कृशानुः	-	पावकः	-	अग्नि

अन्वयाः

1. देवे भृशं वर्षति (सति) जीर्णे गृहे व्याकुला दुःखगृहिणी शीर्णशूर्पशकलं मूर्धनि दत्वा तत् किं यत् न करोति—
सम्प्लुतान् सक्तून् शोचति आक्रन्दतः बालकान् प्रतिकरोति कपरेण सलिलं प्रत्युत्सञ्चति शय्यातृणं (च) रक्षति।
2. अद्य बलेन शिशुजनस्य अशनं जातम् श्वः कथं वा नु भविता इति विचिन्तयन्ती अश्रुपातमलिनीकृतगण्डदेशा दरिद्रगृहिणी रजनीविरामं न ऐच्छत्।

3. बत् प्रायः परमद्विराणां द्वारेषु दत्तकरपल्लवलीनदेहाः लज्जानिगूढवचसः भोक्तुकामा दरिद्रशिशवः भोक्तारम् अर्धनयनेन विलोकयन्ति।
4. हे नाथ! इदं कन्थाखडं प्रयच्छ, यदि वा स्वाङ्के (स्वस्य क्रोंडे) अर्भकं (शिशुं) गृहाण, अत्र भूतलं रिक्तं भवतः पृष्ठे पलालोच्चयः। निशि जल्पतोः दम्पत्योः इति वचः श्रुत्वा एव तदा अन्यतः लब्धं कर्पटम् तदुपरि क्षिप्त्वा रुदन् चौरः निर्गतः।
5. धनलवपरिक्रीतः भृत्यः स्वामिनि हसति हसति (स्वामिनि), रुदति उच्चैः रोदिति, धावति कृतपरिकरः स्वेदोदगारं प्रधावति गुणसमुदितं दोषोपेतं (वा) निन्दति प्रनिन्दति, नृत्यति प्रनृत्यति।
6. रात्रौ जानुः दिवा भानुः द्वयोः सन्ध्ययोः (प्रातः सायञ्च) कृशानुः – इत्थं जानु भानुकृशानुभिः मया शीतं नीतम्।

हिन्दी अर्थ

1. इन्द्र देव के अत्यधिक वर्षा करने पर परेशान गृहिणी टूटे सूप के टुकड़े को सिर पर लेकर क्या ऐसा है जो नहीं करती। (विकलतावश सबकुछ करती है)–भीगे हुए सत्तू की चिंता करती है, रोते हुए बच्चों को चुप कराती है, टूटे बर्तन के टुकड़े से पानी उलीचकर बाहर फेंकती है, तृण के बने बिस्तर (पुआल के बिस्तर) की रक्षा करती है।
2. आज तो प्रयत्नपूर्वक बच्चों का भोजन हो गया, कल किस प्रकार उनका भोजन हो पाएगा, यह सोचती हुई, रोने से जिसके गाल मतिन हो गए हैं ऐसी गरीब की पत्नी नहीं चाहती है कि रात बीते।
3. प्रायः दूसरों के घरों के दरवाजे पर दोनों हाथ रखकर जिसके कारण उनका शरीर छिप गया है और वचन लज्जावश निगूढ़ हो गए हैं (छिप गए हैं), आवाज नहीं निकल पाती। खेद है भोजन की इच्छा रखने वाले गरीबों के ऐसे बच्चे (खाने वालों को) अधखुली आँखों से अर्थात् टकटकी लगा कर देख रहे हैं।
4. मुझे यह कन्थाखडं (कथरी का टुकड़ा) दे दो या अपनी गोद में (मेरे) बच्चे को ले लो (क्योंकि) यहाँ धरती खाली है (जमीन पर बिस्तर नहीं है) तुम्हारी पीठ के नीचे पुआल का ढेर है—इस प्रकार रात्रि में पति-पत्नी की बातचीत सुनकर दूसरे (घर) से प्राप्त चादर को उसके ऊपर फेंककर रोता हुआ चौर निकल गया।

5. अत्यल्प धन से खरीदे हुए नौकर मालिक के हँसने पर हँसते हैं, रोने पर जोर से रोते हैं, स्वामी के दौड़ने पर जोर से कमर पर हाथ रख कर पसीना निकालते हुए दौड़ते हैं, गुणवान् हो या दोषरहित (स्वामी के) निन्दा करने पर अधिक निन्दा करते हैं, (उनके) नाचने पर जोर से नाचते हैं।
6. मेरे द्वारा रात घुटनों के सहारे, दिन सूर्य (की गर्मी) के सहारे दोनों सन्ध्यायें अग्नि के सहारे बिताई गईं। इस प्रकार घुटने, सूर्य और अग्नि के सहारे जाड़े के दिन बिताए।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

 - (क) दरिद्रगृहिणी रजनीविरामं किमर्थं नेच्छति?
 - (ख) परमन्दिराणां द्वारेषु के विलोकयन्ति?
 - (ग) चौरः किं श्रुत्वा रुदन्निर्गतः?
 - (घ) स्वामिनि हसति कः हसति?
 - (ङ) देवे भृशं वर्षति सति दुखःगृहिणी किं करोति?

2. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

 - (क) भृत्यः स्वामिनि रोदिति रोदिति।
 - (ख) शिशुजनस्य अद्य अशनं जातम्।
 - (ग) शिशवः अर्धनयनेन विलोकयन्ति।
 - (घ) माता आक्रन्दतः बालकान् प्रतिकरोति।
 - (ङ) चौरः कर्पटम् क्षिप्त्वा निर्गतः।

3. संधिं/विच्छेदं वा कुरुत-

 - (क) यन्त्र + |
 - (ख) नेच्छत् + |

- (ग) - स्व + अङ्गे।
- (घ) - श्रुत्वा + एव।
- (ङ) दोषोपेतम् - + ।

4. अनेकेषां शब्दानां कृते समुचितम् एकपदं (समस्तपदं) लिखत-

- (क) धनलवेन परिकीर्तः -
- (ख) लज्जया निगूढः वचांसि येषाम् तेषाम् -
- (ग) अश्रुपातेन मलिनीकृतः गण्डदेशः यस्याः सा -
- (घ) कृतः परिकरःयेन सः -

5. पाठमाधृत्य अधोलिखितान्वये रिक्तस्थानानि पूरयत-

धनलवपरिक्रीतः भृत्यः स्वामिनि हस्ति (स्वामिनि) रोदिति धावति
..... स्वेदोदगारं प्रधावति गुणसमुदितं दोषोपेतं वा निन्दति नृत्यति

6. अधोलिखितान् पदान् प्रयुज्य संस्कृतेन वाक्यरचनां कुरुत-

- (क) शिशवः
- (ख) भानुः
- (ग) सलिलम्
- (घ) रजनी
- (ङ) गृहिणी

7. मूलधातुं पुरुषं वचनं च लिखत-

	धातु	पुरुष	वचन
(क) शोचति
(ख) वर्षति
(ग) रोदिति
(घ) धावति
(ङ) नृत्यति

परियोजनाकार्यम्

1. दारिद्र्यं पीडादायकं भवति इति मत्वा दारिद्र्यनिवारणाय प्रयत्नः कर्तव्यः दारिद्र्यम् निन्दनीयम् वा?—स्वविचारान् स्वभाषया लिखत।
2. त्वं कस्यापि निर्धनछात्रस्य सहायतां कथं करिष्यसि—स्वभाषया लिखत।

योग्यताविस्तारः

संस्कृत साहित्य की विकास यात्रा में वेद से लेकर अद्यावधि एक सक्रिय काव्यपरंपरा चल रही है, जिसे हम लोकधर्मों काव्य कहते हैं। यह काव्य परंपरा राजसभा की संकरी दुनिया के बाहर भारतीय जनता के विराट संसार से उपजी थी। कुछ अनाम और अनजाने कवि दरबार की विलासिता और चाकचिक्य कामिनी का सौंदर्यविलास या भक्ति की शान्त सरिता में अवगाहन से अलग हटकर सामान्य जन-जीवन में आने वाली समस्याएँ, उनसे जूझते लोगों की दुर्वस्थाओं का यथार्थ वर्णन करते रहे हैं और उनके माध्यम से तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों का यथातथ्य चित्रण करते रहे हैं। इस तरह के कुछ श्लोक पठितव्य हैं—

1. कदाचित् कष्टेन द्रविणमधमाराधनवशा –
न्मया लब्धं स्तोकं निहितमवनौ तस्करवशात्
ततो नित्ये कश्चिददधदपि तदाखुर्बिलगृहे
नयल्लब्धोऽप्यर्थो न भवति यदा कर्मविषमम् ॥
2. एते दरिद्रशिशवस्तनुजीर्णकन्थां
स्कन्धे निधाय मलिनां पुलकाकुला
सूर्यस्फुरत्करकदम्बितभित्तिदेश
लाभाय शीतसमये कलिमाचरन्ति ।
3. लग्नः शृङ्घयुगे गृही सतनयो वृध्दौ गुरुपाश्वयोः ।
पुच्छाग्रे गृहिणी खुरेषु शिशावो लग्नः वधूः कम्बले ।
एकः शीर्णजरदग्वो विधिवशात् सर्वस्वभूतो गृहे
सर्वैरेव कुटुम्बकेन रुदता सुप्तः समुत्थाप्यते ॥

4. सुखं हि दुःखान्नुभूयशोभते
घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्
सुखातु यो याति नरो दरिद्रतां
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति॥

ध्यातव्य – महाकवि शूद्रक कृत प्रसिद्ध सामाजिक प्रकरण ‘मृच्छकटिकम्’ छात्रों को अवश्य पढ़ना चाहिए जिसमें दारिद्र्य के सहज चित्रण के अतिरिक्त समाजिक परिस्थितियों/विसंगतियों का यथार्थ चित्रण है।

तत्सम-तद्भव शब्द

तत्सम	तद्भव
कथा	कथरी
अश्रु	आँसू
गण्ड	गाल
लज्जा	लाज
पलाल	पुआल
चौरः	चोर



